साधु-प्रतिक्रमण-सूत्र

(ॐ) जिनकृपालभ्य

श्रीमज्जिनदत्तसूरिप्राचीनपुस्तकोद्धारफंड–ग्रंथांकः ३५

मूलमें अन्वयके अंक तथा विशेष अर्थकी टिप्पणी युक्त शब्दार्थ मात्र हिंदी अर्थ सहित साधु–साध्वी योग्य

पंच-प्रतिक्रमण-सूत्र

कोटिगण वज्रशाखा चंद्रकुल बृहत्खरतरगच्छगगनांगण सूर्यसमान पत्तन चैत्यवासी यतिपति विजेता सूरिपुरंदर सुविहित सिद्धांत मार्गानुसारी श्रीजिनेश्वरसूरीश्वर नवांगसूत्र टीकाकार श्रीमद् अभयदेवसूरीश्वर श्रीजिनवल्लभसूरीश्वर श्रीजिनदत्तसूरीश्वर परंपरानुगत क्रियोद्धारक श्रीमोहनमुनीश्वर महातपस्वी श्रीजिनयशस्सूरीश्वर आज्ञानुवर्ति अनुयोगाचार्य पंन्यासजी महाराज श्रीकेशरमुनिजी गणिके सदुपदेशसे श्रीसुरत बंदर निवासि झवेरी श्रेष्ठि कल्याणचंद्र सुपुत्र प्रेमचंद्र पत्नी श्राविका रतनबाई आदिकी द्रव्य सहायसे छपवाके प्रकाशित किया.

श्री सिद्धाचल कल्याण भुवन तथा सुरत नवा उपासरावाली श्राविका रतनबेन–गोपीपुरा सुरत.

श्री "जैन विजयानंद" प्रीं० प्रेस,–कणपीठ बजार सुरतमें शा. मोहनलाल मगनलाल बदामीने मुद्रित किया.

वीर संवत् २४५९ विक्रम संवत् १९८९ मूल्य रु. १–०–०

इस पुस्तकको छपानेमें जिन महाशयोंने उदार चित्तसे मदद करी है उनके शुभ नाम नीचे मुजब है

५०१ झवेरी कल्याणचंदभाइके सुपुत्र प्रेमचंदभाइकी घरवाली श्राविका रतन बेन सुरत.
१०१ जेसलमेरवाले शेठजी चांदमलजी पटवाकी घरवाली श्राविका फूलकुंवर बाई कलकत्ता.
१०० रायबहादुर बाबू सुखराजजी राय नाथनगर (भागलपुर–चंपापुरी)
१०० शेठजी किसनलालजी संपतलालजी लुणावत पाली.
६९ शेठजी फतेमलजी सिहाल पाली.
५० जौहरी इंद्रचंदजी जरगडकी बहु श्राविका शिखरुबाई तथा श्रावक हमीरमलजी गुलेछा जयपुर.
२५ शेठजी उदयचंदजी हालाखंडी पाली.
१२ शेठजी लालुभाइ हेमचंदभाइ सुखडीया सुरत.

पुस्तक १ की कीमत रु. १) ३ की २।।) ७ की ५) १० की ७) १५ की १०) २० की १२) २५ की १४) ज्ञानमें

पुस्तक मिलनेका पता— श्रीजिनदत्तसूरिजी ज्ञानभंडार, ठि० पायधूनी, श्रीमहावीर स्वामीका मंदिर मु० मुंबई.
श्रीजिनदत्तसूरिजी ज्ञानभंडार. ठि० गोपीपुरा–शीतलवाडी–मु० सुरत सिटी.

करेमि भंते !

नमस्कार हो, अरिहंतोंकुं०। करताहूं,हेभगवन् !, सामायिककुं,सबतरहके,पापसहित, योगकुं, त्यागताहूं,जहांतकजीवूं(वहांतक),त्रिविधकुं[१],

नमो,अरिहंताणं०।[२]करेमि, [१]भंते !, सामाइयं, [३]सव्वं,सावज्जं, जोगं,पच्चक्खामि,जावज्जीवाए, [५]तिविहं,

तीनप्रकारसे, मनकरके,वचनकरके, कायाकरके, नहीं, करूं, नहीं, कराऊं, करतेकुं, भी,दुसरेकुं, नहीं, अनुमोदूं(भलासमझूं),

[४]तिविहेणं,मणेणं, वायाए, काएणं, [६]न,करेमि, न, कारवेमि, [९]करंतं, [८]पि, [७]अन्नं, [१०]न, समणुजाणामि,

४१

उससे[२], हेभगवन् !,(मैं) पीछाहटताहूं, [३]निंदताहूं, गर्हताहूं(गुरुसाखे),आत्माकुं[४], वोसिरा(हटा)ताहूं। अर्थ संथारा पोरिसिमें देखो

[१२]तस्स, [११]भंते !, [१३]पडिक्कमामि,निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं, वोसिरामि। चत्तारि मंगलं अरिहंता

चत्तारि मंगलं

मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवली पन्नत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवली पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पवज्जामि अरिहंते सरणं पवज्जामि सिद्धे सरणं पवज्जामि साहू सरणं पवज्जामि केवली पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे०

इच्छताहूं, पीछाहटना, जो, मैंने, रात्रिसंबंधी, अतिचार,कियाहो(तथा),कायासंबंधी, वचनसंबंधी, मनसंबंधी, सूत्रविरुद्ध,

[१]इच्छामि,पडिक्कमिउं, [६]जो,मे, राइओ*,अइआरो, कओ, [३]काइओ, वाइओ,माणसिओ, उस्सुत्तो,

---

१ करने कराने अनुमोदने रूप पापकुं। २ पहलेके पापसे। ३ आत्मसाखे। ४ उस पापसे। *देवसी आदि में 'देवसिओ-पक्खिओ-चउमासिओ-संवच्छरिओ' ऐसे बोलना।

४

उन्मार्ग(विरुद्ध),अकल्प्य[१],अकरणीय,(नकरनेयोग्य)दुष्टध्यायाहो,दुष्टचिंतवाहो, नहीं आचरने योग्य,नहीं इच्छने योग्य, नहीं साधुके(प्रा)योग्य,
उम्मग्गो, अकप्पो,अकरणिज्जो,[५]दुज्झाओ,दुव्विचिंतिओ,[४]अणायारो,अणिच्छियव्वो, असमण पाउग्गो,
ज्ञानमें, तथा, दर्शनमें, चारित्रमें,श्रुतधर्म में, सामायिकमें, तीन, गुप्तिसंबंधी, चार, कषायों संबंधी, पांच, महाव्रत संबंधी, छ,
[२]नाणे,तह,दंसणे, चरित्ते, सुए, सामाइए, [७]तिन्हं, गुत्तीणं, चउन्हं, कसायाणं,पंचन्हं,महव्वयाणं,छन्हं,
जीव निकायसंबंधी,सातप्रकारकी,पिंडैषणा[२]संबंधी, आठ,प्रवचन माता संबंधी, नव, ब्रह्मचर्यकी,गुप्ति(वाड)संबंधी,दशविध, साधु, धर्ममें,
जीवनिकायाणं,सत्तन्हं,पिंडेसणाणं, अठ्ठन्हं,पवयणमाऊणं,नवन्हं,बंभचेर गुत्तीणं,दसविहे,समण, धम्मे,
श्रमणोंके,योगों(आचारों)का,जो,खंडा(भांगा)हो,जो, विराधाहो,उससंबंधी,मिथ्याहो,मेरा, दुष्कृत ।
समणाणं,जोगाणं, जं, खंडियं, जं, विराहियं,तस्स, [९]मिच्छा,[८]मि,दुक्कडं ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं इरिया०
इच्छताहूं, पीछाहटना, अत्यंत(रात्रिभर),सुणेसे। (हमेशां)अत्यंत, सुणेसे, संथारेमें,(पसवाडाविना पूंजे) फिरानेसे,वारंवार फिरानेसे,
इच्छामि,पडिक्कमिउं,पगाम, सिज्जाए। निगाम, सिज्जाए,संथारा, उव्वट्टणाए, परियट्टणाए,
हाथपगादिभेलेकरनेसे,पसारनेसे, षट्पदीको,संघट्टनेसे,[२]खांसनेसे,शय्याके दोषकहनेसे,[३]छींकनेसे,बगासीलेनेसे,[४]स्पर्शनेसे,रजवाली वस्तुस्पर्शनेसे,
आउंटणाए,पसारणाए,छप्पइय,संघट्टणाए,कूइए, कक्कराइए, छीए, जंभाइए,आमोसे,ससरक्खामोसे,

१ आचार विरुद्ध । २ आहारादिकी तलाशी । ३ खुले मुखसे । ४ विनापूंजे किसी वस्तुको ।

आकुलव्याकुलतासे[१],स्वप्ननिमित्तवाली विराधनासे,स्त्रीविपर्यास(स्वप्नमें कुशीलसेवनादि)से,दृष्टिविपर्यास(स्त्रीमेंरागनजर)से, मनकेविपर्यास-
आउलमाउलाए, सोअण वत्तिआए, इत्थी विप्परिआसिआए, दिट्ठी विप्परिआसिआए,मणविप्परि-
(मनोविकार)से,पाणी भोजनके,विपर्यास(रात्रिमें खानेपीनेकी इच्छा)से,जो,मैंने,रात्रिसंबंधी,अतिचार,कियाहो,उसका,मिथ्याहो,मेरे, दुष्कृत(पाप) ।
आसिआए,पाणभोअण, विप्परिआसिआए, जो,मे,*राइओ,अइआरो,कओ,तस्स,मिच्छा,मि,दुक्कडं१।
पीछाहटताहूं, गौके चरणेकी रीतिवाली,भिक्षाचर्या में(लगेदोषोंसे),थोडेउघडे,कमाड, उघाडनेसे, श्वान(कुत्ते),वाछरडे,स्त्री बच्चेकुं, संघट्टनेसे,
पडिक्कमामि,गोअरचरिआए,भिक्खायरिआए,उग्घाड,कवाड,उग्घाडणाए,साणा,वच्छा,दारा,संघट्टणाए,
मंडिप्राभृतिकासे[२], बलिप्राभृतिकासे[३], स्थापना प्राभृतिकासे[४], ×शंकावालीसे,उतावलकरके[५],(दोषोंकी)विनातलाशीसे,पाणीवाले भोजनसे,
मंडी पाहुडिआए,बलिपाहुडिआए,ठवणा पाहुडिआए,संकिए, सहसागारे, अणेसणाए, पाणभोअणाए,
बीजवाले भोजनसे, लीलोतरीवालेभोजनसे, पश्चात्कर्मसे[६], पुरः(पूर्व)कर्मसे[६],नहीं देखी चीज लाइलेनेसे,पाणीके संबंधवालीलानेसे,
बीअ भोअणाए, हरिअ भोअणाए, पच्छाकम्मियाए,पुरेकम्मियाए, अदिट्ठ हडाए,दग संसट्ठ हडाए,

---

१ स्त्री भोगादि वीवाहादि युद्धादि जंजालसे । २ उपरका अन्न हटाके या अन्य बर्तनमें निकालके देवे । ३ दिशाओंमें या अग्निमें बलि (जेति आहुति) नांखके देवे । ४ साधुके निमित्त स्थापन करके रखी लेनेसे । × आधाकर्मादि दोषकी । ५ अशुद्ध भिक्षालेनेसे । ६ वहोराए पीछे या पहले कच्चे पाणीसे हाथ धोना आदि । * देखो पृष्ठ ३७ में ।

रजके स्पर्शवाली लानेसे, ढोलते दी हुइ लेनेसे, परठके[1] दिया लेनेसे, उत्तम वस्तु मांगनेरूप भिक्षासे,जो, उद्गमसे, उत्पादना एषणासे×,
रय संसठ्ठहडाए,पारिसाडणियाए, पारिठ्ठावणियाए, ओहासण भिक्खाए,जं,उग्गमेणं,उप्पायणेसणाए,
पूराशुद्धनहींहै[2],ग्रहणकियाहो, खायाहो, अथवा,जो[3],नहीं, परठाहो, उससंबंधी,मिथ्याहो,मेरे, दुष्कृत। पीछाहटताहूं, चारकालमें,
अपरिसुद्धं,पडिग्गहियं,परिभुत्तं, वा, जं, न,परिठ्ठवियं,तस्स, मिच्छा,मि,दुक्कडं।२। पडिक्कमामि,चाउक्कालं,
सज्झाय(सूत्रपाठ)के, नहींकरनेसे, उभय(दोनुं) काल, (वस्त्रादि)भांडोपकरणको, नहींपडिलेहणेसे[4], खराबपडिलेहणेसे, नहींप्रमार्जनेसे[5],
सज्झायस्स,अकरणयाए, उभओ,कालं,भंडोवगरणस्स,अप्पडिलेहणाए,दुप्पडिलेहणाए, अप्पमज्जणाए,
खराबप्रमार्जनेसे, अतिक्रममें[6],व्यतिक्रममें[7],अतिचारमें[8],अनाचारमें[9],जो,मैंने,रात्रिसंबंधी, अतिचार,कियाहो, उसका,मिथ्याहो, मेरे, दुष्कृत।
दुप्पमज्जणाए, अइक्कमे,वइक्कमे,अइयारे,अणायारे,जो,मे, राइओ,*अइयारो,कओ,तस्स,मिच्छा,मि,दुक्कडं
पीछाहटताहूं, एकप्रकारके, असंजमसे। पीछाहटताहूं, दो, बंधनोंसे-रागके, बंधनसे, द्वेषके, बंधनसे।
पडिक्कमामि, एगविहे,असंजमे १। पडिक्कमामि,दोहिं,बंधणेहिं - राग,बंधणेणं,दोस,बंधणेणं २।

---

१ वहरानेके भाजनमें रही चीजउतावलसे नांखके उसी भाजनसे। २ वैसा आहारादि। ३ परठने योग्यको। ४ नजरसे न देखनेसे। ५ ओघेसे न पूंजनेसे। ६ आधाकर्मादि दोष दूषित आहारके निमंत्रणको स्वीकारना. 'अतिक्रम.'। ७ दूषित आहार लेनेको जाना. 'व्यतिक्रम'। ८ उसीको ले लेना 'अतिचार'। ९ वह दूषित आहार लाकर खालेना. 'अनाचार' हैं। * देखो पृष्ट ३७में। × आधाकर्मादि सोले उद्गमके. उद्देशिकादि सोले उत्पादनाके तथा शंकितादि दश एषणाके दोषोंसे।

पीछाहटताहूं, तीन, दंडोंसे—मन दंडसे, वचन दंडसे, काय दंडसे। पीछाहटताहूं, तीन,गुप्तियोंके(दोष)से, मनगुप्तिसे,वचनगुप्तिसे,
पडिक्कमामि,तिहिं,दंडेहिं - मणदंडेणं,वयदंडेणं,कायदंडेणं। पडिक्कमामि,तिहिं,गुत्तीहिं - मणगुत्तीए,वयगुत्तीए,
काय गुप्तिसे। पीछा हटताहूं, तीन, शल्योंसे—कपट शल्यसे, नियाणा[1] शल्यसे, मिथ्या दर्शन शल्यसे। पीछा हटताहूं,
कायगुत्तीए। पडिक्कमामि,तिहिं,सल्लेहिं - मायासल्लेणं,नियाणसल्लेणं, मिच्छादंसणसल्लेणं। पडिक्कमामि,
तीन,गारवों(अभिमानों)से—ऋद्धिके गर्वसे, रसके गर्वसे, साताके गर्वसे। पीछाहटताहूं, तीन, विराधनाओंसे—ज्ञानकी विराधनासे,
तिहिं,गारवेहिं - इड्ढीगारवेणं,रसगारवेणं,सायागारवेणं। पडिक्कमामि,तिहिं,विराहणाहिं - नाणविराहणाए,
दर्शनकी विराधनासे, चारित्रकी विराधनासे। पीछाहटताहूं, चार, कषायोंसे—क्रोध कषायसे, मान कषायसे, माया-
दंसण विराहणाए,चरित्त विराहणाए ३। पडिक्कमामि,चउहिं,कसाएहिं- कोहकसाएणं,माणकसाएणं,माया-
कषायसे, लोभ कषायसे। पीछाहटताहूं, चार, संज्ञा(वांछा)ओंसे—आहार संज्ञासे, भय संज्ञासे, मैथुन(दुराचार)संज्ञासे, परिग्रह
कसाएणं,लोभकसाएणं। पडिक्कमामि,चउहिं,सन्नाहिं - आहारसन्नाए,भयसन्नाए,मेहुणसन्नाए, परिग्गह-
संज्ञासे। पीछाहटताहूं. चार. विकथाओंसे—स्त्रीयोंकी कथासे,भोजनकी कथासे,देशकीकथासे,राजकीकथासे। पीछाहटताहूं, चार,
सन्नाए। पडिक्कमामि,चउहिं,विकहाहिं- इत्थीकहाए,भत्तकहाए,देसकहाए,रायकहाए।पडिक्कमामि,चउहिं,

१ तपस्यादिके प्रभावसे भवांतरमें देव मनुष्यादि ऋद्धिकी अभिलाषा रूप।

ध्यानों(के दोष)से-आर्त[१]ध्यानसे, रौद्र[२]ध्यानसे, [३]धर्म ध्यानसे, [३]शुक्ल ध्यानसे। पीछाहटताहूं, पांच, क्रियाओंसे-

झाणेहिं-अट्टेणं झाणेणं, रुद्देणं झाणेणं,धम्मेणं झाणेणं,सुक्केणं झाणेणं ४। पडिक्कमामि,पंचहिं, किरियाहिं-

कायिकीसे[४],अधिकरणिकी(शस्त्रादि)से,प्राद्वेषीकी[५]से, पारितापनीकी[६]से, प्राणातिपात(हिंसा)कीक्रियास। पीछाहटताहूं, पांच, काम-

काइयाए, अहिगरणियाए,पाउसियाए, पारितावणियाए,पाणाइवायकिरियाए। पडिक्कमामि,पंचहिं,काम-

गुणोंसे-शब्दसे, रूपसे, रससे, गंधसे, स्पर्शसे। पीछाहटताहूं, पांच, महाव्रतों(के दोष)से-प्राणातिपात(हिंसा)से, विरमना[७],

गुणेहिं-सद्देणं,रूवेणं, रसेणं, गंधेणं,फासेणं। पडिक्कमामि, पंचहिं, महव्वएहिं-पाणाइवायाओ, वेरमणं,

मृषावाद(झूंट)से, विरमना, अदत्तादान(चोरी)से, विरमना,मैथुन(कुशील)से,विरमना,(धनादि नवविध)परिग्रहसे,विरमना। पीछाहटताहूं,

मुसावायाओ,वेरमणं,अदिन्नादाणाओ, वेरमणं, मेहुणाओ, वेरमणं, परिग्गहाओ, वेरमणं। पडिक्कमामि,

पांच, समितिओं(के दोष)से-ईर्या समितिसे[८], भाषा समितिसे, एषणा [९]समितिसे, लेने(तथा),भांडमात्र[१०]के, रखनेकी, समितिसे,

पंचहिं,समिईहिं-ईरिया समिइए,भासासमिइए,एसणासमिइए, [२]आयाण, [१]भंडमत्त, [३]निक्खेवणा,समिइए,

१ दुःख चिंता। २ जीव मारणादिके। ३ ये दो ध्यान नहीं ध्यानेसे। ४ काया संबंधी। ५ दूसरों पर द्वेषसे। ६ स्वपरको ताप (दुःख) देनेसे। ७ निवर्तना।
८ चलनेमें उपयोग रखना. वह न रखनेसे। ९ गौचरि आदिके दोषोंकी तलाशी। १० सब उपकरणों।

ठल्ला, मातरा, थूंक(खंखारा), [1]मैल,नाकमल(सेडा), परठणेकी, समितिकेदोषसे। पीछा हटताहूं, छ,जीवनिकायों(कीविराधना)से-
उच्चार,पासवण, खेल, जल्ल.सिंघाण.पारिठ्ठावणिया,समिइए ५। पडिक्कमामि,छहिं, जीवनिकाएहिं-
पृथीवीकायसे, अपकायसे, अग्नीकायसे, वायुकायसे, वनस्पतिकायसे, त्रसकायसे। पीछाहटताहूं, छ,लेश्याओं [2] से-
पुढविकाएणं,आउकाएणं,तेउकाएणं,वाउकाएणं,वणस्सइकाएणं,तसकाएणं। पडिक्कमामि,छहिं,लेसाहिं-
कृष्ण लेश्यासे, नील लेश्यासे, कापोत लेश्यासे, तेजो लेश्यासे, पद्म लेश्यासे, शुक्ल लेश्यासे। पीछाहटताहूं, सातों, भयके-
किन्ह लेसाए,नील लेसाए,काउ लेसाए,तेउ लेसाए,पम्ह लेसाए,सुक्कलेसाए ६। पडिक्कमामि,सत्तहिं,भय-
स्थानोंसे। आठ, मदकेस्थानोंसे। नव, ब्रह्मचर्यकी,गुप्ति(वाडों)से।(क्षमादि)दशविध, श्रमणधर्म में। इग्यारे, श्रावककी,प्रतिमाओंसे।
ठ्ठाणेहिं। अठ्ठहिं,मयठ्ठाणेहिं। नवहिं,बंभचेर,गुत्तीहिं। दसविहे,समणधम्मे। इगारसहिं,उवासग,पडिमाहिं।
बारे, साधुकी, प्रतिमाओंसे। (अर्थक्रियादि)तेरे,क्रियाके स्थानोंसे। [3]चउदे,जीव समुदायों(कीहिंसा)से। पनरे,परमाधामिओं(कीप्रशंसा)से।
बारसहिं,भिक्खु,पडिमाहिं। तेरसहिं,किरिया ठाणेहिं। चउद्दसहिं,भूयगामेहिं। पन्नरसहिं,परमाहम्मिएहिं।
(सूयगडांग[4])सोले,गाथाषोडशकोंसे[5]। सतरेप्रकारके, असंयममें(वर्तनेसे)। अठ्ठारेप्रकारके,अब्रह्ममें[6]। एक कम वीस(१९),[7] ज्ञातअध्ययनोंसे।
सोलसहिं,गाहासोलसएहिं। सत्तरसविहे,असंजमे। अठ्ठारसविहे,अबंभे। एगूणवीसाए,णायऽज्झयणेहिं।

१ शरीरादिका। २ में वर्तते हुए लगे दोषों। ३ एकेंद्रिय आदि। ४ प्रथम श्रुतस्कंधके। ५ गाथा बद्ध १६अध्ययनोंको न पढनेसे। ६ कुशील सेवनसे। ७ज्ञातासूत्र प्रथम श्रुत स्कंधके।

वीस,असमाधिके स्थानोंसे।(१ हस्तकर्मादि)एकवीस,शबलोंसे। (क्षुधादि)बावीस,परीषहोंसे। तेवीस,सूयगडांग(२श्रुतस्कंधों)के,अध्ययनोंसे।
वीसाए,असमाहिठाणेहिं। एक्कवीसाए,सबलेहिं। बावीसाए,परीसहेहिं। तेवीसाए,सूअगड,ऽज्झयणेहिं।
चोवीस[२],(तीर्थंकर)देवोंसे। (५ महाव्रतोंकी)पच्चिस,भावनाओंसे। छव्वीस,दशाकल्पव्यवहारके,(उद्देशादिविधिरूप)उद्देशनकालोंसे। सत्तावीस,
चउवीसाए,देवेहिं। पणवीसाए, भावणाहिं। छव्वीसाए,दसाकप्पववहाराणं,उद्देसणकालेहिं। सत्तावीसाए,
अनगारके,गुणों(में न वर्त्तने)से। [३]अठावीस, आचारप्रकल्पोंसे। एक कम तीस,(अष्टांगनिमित्तादि)पापश्रुतकेप्रसंगोंसे। तीस, मोहनीयस्था-
अणगार, गुणेहिं। अठ्ठावीसाए,आयारपकप्पेहिं। एगूणतीसाए,पावसुअपसंगेहिं। तीसाए,मोहणीयठा-
नोंसे। एकतीस, सिद्धोंके आदि[४], गुणोंसे। (आलोयणा ५)बत्तीस,योगसंग्रहोंसे। (गुरुकी)तेत्तीस, आशातनाओंसे। अरिहंतोंकी,
णेहिं। इगतीसाए,सिद्धाइ, गुणेहिं। बत्तीसाए,जोगसंगहेहिं। तेत्तीसाए, आसायणाहिं। अरिहंताणं,
आशातनासे। सिद्धोंकी, आशातनासे। आचार्योंकी, आशातनासे। उपाध्यायोंकी, आशातनासे। साधुओंकी,
आसायणाए। सिद्धाणं, आसायणाए। आयरियाणं,आसायणाए। उवज्झायाणं,आसायणाए। साहूणं,
आशातनासे। साध्वीओंकी, आशातनासे। श्रावकोंकी, आशातनासे। श्राविकाओंकी, आशातनासे। देवोंकी, [६]आशात-
आसायणाए। साहुणीणं,आसायणाए। सावयाणं,आसायणाए,सावियाणं,आसायणाए। देवाणं,आसाय-

३ आचारांगके २५ अध्ययन तथा उद्‌घात, अनुद्‌घात, और आरोपणा, ये तीन भाग निशीथके, कुल। ४ एक साथ उत्पन्न होनेवाले। ५ लेना देना आदि। ६ अवर्णवाद बोलनेकी।

१ चारित्र मैला करनेवाले।

२ भवनपत्यादि २४ प्रकारके या।

नासे। देविओंकी,आशातनासे। इस(मनुष्य)लोककी,आशातना[1]से। परलोककी, आशातनासे। केवलीओंकी, आशातनासे।
णाए। देवीणं,आसायणाए। इहलोगस्स,आसायणाए। परलोगस्स,आसायणाए। केवलीणं,आसायणाए।
केवलीने प्ररूपे हुए, धर्मको, आशातनासे। देवमनुष्यअसुर(भवनपतिदेव)सहित,१४लोककी, आशातनासे। सर्व, प्राणी, भूत,
केवलिपन्नत्तस्स,धम्मस्स,आसायणाए। स देवमणुआऽसुरस्स,लोगस्स,आसायणाए। सव्व,पाण,भूअ,
जीव, सत्वोंकी,आशातनासे। दिन पक्षादि कालकी,खोटी परूपणा आशातनासे। श्रुत(ज्ञान)की,आशातनासे। श्रुतदेवताकी, आशातनासे।
जीव,सत्ताणं,आसायणाए। कालस्स,आसायणाए। सुअस्स,आसायणाए। सुअदेवयाए,आसायणाए।
[2]वाचनाचार्यकी, आशातनासे। जो(पद),आगेपीछेबोलाहो, अन्यपदादि मिलाकेबोलाहो,हीनअक्षरबोलाहो, अधिकअक्षरबोलाहो,
वायणारिअस्स,आसायणाए। जं, वाइद्धं, वच्चामेलियं, हीणऽक्खरं, अच्चऽक्खरं,
पदहीनबोलाहो, विनयहीनपढाहो,घोष[3]हीनबोलाहो,जोगहीन[4]भणाहो,[5]अच्छीतरेदिया,(मैंने)दुष्टपणे,अंगीकारकियाहो,अकालमें, कियाहो,
पयहीणं, विणयहीणं, घोसहीणं, जोगहीणं, सुट्ठु दिन्नं, दुट्ठु, पडिच्छियं,अकाले, [1]कओ,
स्वाध्याय(पढना),कालमें, नहीं,कियाहो,स्वाध्याय(पढना),[6]असज्झायमें,स्वाध्यायकियाहो,सज्झायमें[7],नहीं,स्वाध्याय[1]कियाहो,उसका,मिथ्याहो,
[1]सज्झाओ,[3]काले,[5]न,कओ,[4]सज्झाओ,[6]असज्झाइए,सज्झाइयं,सज्झाइए,न,सज्झाइयं,तस्स, मिच्छा,

१ असत्य-प्ररूपणा।

२ उपाध्यायकीआज्ञासे उद्देशादि कराने वाले।

३ उदात्तादि उच्चारण-अवाज। ४ योगवहे विना 'योगरहितं-सम्यगकृतयोगोपचारं' आव०वृ०पत्र ७३१। ५ आप गुरुने। ६ ग्रहण तारा तूटना आदि। ७ असज्झायका कारण न होनेपर।

मेरे, दुष्कृत । नमस्कारहो, चोवीसों, तीर्थंकरोंकुं, ऋषभ आदि, महावीर(स्वामी)पर्यंत, [1]यहही, [2]निर्ग्रंथोंका,प्रवचन(सिद्धांत),
मि,दुक्कडं ॥[3]नमो,[2]चउवीसाए,तित्थयराणं,[1]उसभाइ,महावीरपज्जवसाणाणं,[4]इणमेव,निग्गंथं, पावयणं,
सत्यहै,अनुत्तरहै[3],अद्वितीयहै[4], ÷प्रतिपूर्णहै,मोक्षलेजानेवालाहै,सम्यक्शुद्धहै, [5]शल्योंकुंकाटनेवालाहै, सिद्धिकामार्गहै, मुक्तिका[6]मार्ग है,
सच्चं,अणुत्तरं,केवलियं, पडिपुन्नं, नेआउयं, संसुद्धं, सल्लगत्तणं, सिद्धिमग्गं, मुत्तिमग्गं,
निरुपमयान[7]का,मार्गहै, निर्वाणका[8]मार्गहै,अवितथ(सत्य)है,विच्छेदरहितहै[9], सर्वदुःखप्रहीणका[10]मार्ग है । इसमें[11], रहेहुए, जीव,
निज्जाण, मग्गं, निव्वाणमग्गं, अवितह, मविसंधिं, सव्वदुक्खप्पहीण मग्गं । इत्थं,ठिया,जीवा,
सिद्धहोतेहैं,[12]बोधपातेहैं,मुक्तहोते हैं[13],सबतरहशांतहोते हैं, सब दुःखोंका अंत, करते हैं। उस×, धर्मकुं, सद्दहताहूं, [14]स्वीकारताहूं,
सिज्झंति,बुज्झंति, मुच्चंति,परिनिव्वायंति,सव्वदुक्खाणमंतं,करंति। तं, धम्मं,सद्दहामि,पत्तिआमि,
रोचताहूं,फरसताहूं, पालताहूं, विशेषपालताहूं । उस×, धर्मकुं,सद्दहताहुआ,स्वीकारताहूआ,रोचताहुआ,फरसताहुआ,पालताहुआ, विशेष-
रोएमि,फासेमि,पालेमि,अणुपालेमि । तं, धम्मं, सद्दहंतो,पत्तिअंतो, रोअंतो, फासंतो, पालंतो, अणु-

१ सामायिकादि द्वादशांग रूप। २ द्रव्य भाव ग्रंथ रहित मुनि। ३ सर्वोत्तमहै। ४ इसके समान दूसरा नहींहै। ÷ मोक्ष प्राप्तिके गुणोंसे। ५ माया आदि तीन। ६ कर्मोंसे छूटनेका। ७ मोक्ष स्थानके प्रयाण। ८ कर्म अग्नि बुझानेका। ९ महाविदेहमें निरंतर होनेसे या शाश्वताहै। १० सब दुःखोंका नाश है जिसमें ऐसे मोक्षका। ११ निर्ग्रंथके प्रवचनमें। १२ केवलज्ञान-दर्शनसे। १३ कर्मोंसे छूटतेहैं। × निर्ग्रंथ प्रवचनमें कहे। १४ प्रीति पूर्वक।

पालताहुआ, उस[1], धर्मकी, केवलीने परूपे हुए, अभ्युत्थित(तयार)हुआहूं, आराधनाकेवास्ते, विरता(रुका)हूं, विराधनासे, असंजमकुं,
पालंतो, [2]तस्स, धम्मस्स, [1]केवलिपन्नत्तस्स, [4]अब्भुट्ठिओमि, [3]आराहणाए, [6]विरओमि, [5]विराहणाए, [7]असंजमं,
सबतरहजाणताहूं[2], संजमकुं, अंगीकार करताहूं, अब्रह्म(कुशील)कुं, सबतरहजाणताहूं, ब्रह्म(शील)कुं, अंगीकार करताहूं, अकल्प[3]कुं, सबतरह-
परियाणामि, संजमं, उवसंपज्जामि, अबंभं, परियाणामि, बंभं, उवसंपज्जामि, अकप्पं, परिया-
जाणताहूं, कल्पकुं, अंगीकार करताहूं, अज्ञान[4]कुं, सबतरहजाणताहूं, ज्ञानकुं, अंगीकार करताहूं, अक्रिया[5]कुं, सबतरहजाणताहूं, क्रिया[6]कुं,
णामि, कप्पं, उवसंपज्जामि, अन्नाणं, परियाणामि, नाणं, उवसंपज्जामि, अकिरियं, परियाणामि, किरियं,
अंगीकार करताहूं, मिथ्यात्वकुं, सबतरहजाणताहूं, सम्यक्त्वकुं, अंगीकार करताहूं, अबोधि[7]कुं, सबतरहजाणताहूं, बोधि[8]कुं, अंगीकारकरताहूं,
उवसंपज्जामि, मिच्छत्तं, परियाणामि, सम्मत्तं, उवसंपज्जामि, अबोहिं, परियाणामि, बोहिं, उवसंपज्जामि,
अमार्ग[9]कुं, सबतरहजाणताहूं, मार्ग[10]कुं, अंगीकारकरताहूं, जो, मेरेकुं यादहै, जो, फेर, नहीं, यादआताहै, जो, [11]पडिक्कमताहूं, जो, फेर, [12]नहीं,
अमग्गं, परियाणामि, मग्गं, उवसंपज्जामि, जं.संभरामि, जं, च, न, संभरामि, जं, पडिक्कमामि, जं, च, न,

१ निर्ग्रंथ प्रवनमें बताये। २ जाणनेकी बुद्धिसे जाणके त्याग बुद्धिसे त्यागताहूं, ऐसा सर्वत्र समझना। ३ अनाचार। ४ मिथ्याज्ञान। ५ नास्तिकवाद। ६ सम्यग्वाद। ७ मिथ्यात्वके कार्य। ८ सम्यक्त्वके कार्य। ९ मिथ्यात्व कषायादि। १० सम्यग्दर्शनादि। ११ उपयोगादिसे जाणा हुआ दोष। १२ अजाणमें रहे हुए सूक्ष्म दोष।

पडिक्कमताहूं, उस, सब, रात्रिसंबंधी, अतिचारकुं, पडिक्कमताहूं, श्रमणहूं, मैं,संयमवाला,विरता हुआ,नाशकिये(तथा),
पडिक्कमामि,तस्स,सव्वस्स,राइअस्स*,अइयारस्स,पडिक्कमामि,समणोऽहं,संजय, विरय, पडिहय,
त्यागेहैं, पापकर्म जिसने, नियाणा रहित,सम्यग्दृष्टियुक्तहुआ,मायायुक्तमृषासे,विवर्जितहुआ(मैं)। आधेतीसरे(२॥), द्वीप, समुद्रों में,
पच्चक्खाय,पावकम्मो,अनियाणो,दिट्ठिसंपन्नो,माया मोस, विवज्जिओ । अड्ढाइज्जेसु,दीव,समुद्देसु.
(५भरतादि)पनरे,कर्मभूमिओंमें, जितने, कोइभी, साधुहै, रजोहरण, गुच्छे, पात्रोंके, धारक, पांच महाव्रतोंके, धारक, अढारे,
पन्नरससु,कम्मभूमिसु,[२]जावंत,केवि, साहू,[१]रयहरण,गुच्छ,पडिग्गह,धारा, पंचमहव्वय, धारा,अट्ठारस,
हजार, शीलांगके, धारक, अखंड आचारयुक्त चारित्रवाले,उन, सबकुं,शिरनमाके, मनसे[१], मस्तकसे, वांदताहूं। खमाताहूं,
सहस्स,सीलंग, धारा, अक्खयायारचरित्ता, [३]ते,सव्वे,सिरसा मणसा,मत्थएण,वंदामि । [१]खामेमि
सब,जीवोंकुं। सर्व, जीव, खमाओ, मेरेकुं। मित्रताहै,मेरे, सर्व,भूतों(जीवों) में। वैर(भाव),मेरे,नहींहै,किसीसे। इसतरहमैं, आलोचके,
सव्व,जीवे। सव्वे,जीवा,[३]खमंतु,[२]मे।[५]मित्ती,[४]मे,सव्व,भूएसु।[८]वेरं,[६]मज्झ,[९]न,[७]केणई[१]।एवमहं,[३]आलोइय,
[२]निंदके। गर्हके[३], दुगुंछित[४]कुं,अच्छीतरह। त्रिविध[५]करके,पीछाहटाहुआ। वांदताहूं, जिनेश्वरोंकुं,चोवीसों। | २ वांदणे,
निंदिय। गरहिय,[३]दुगुंछियं, सम्मं। [४]तिविहेण,पडिक्कंतो।[७]वंदामि,[६]जिणे,[५]चउव्वीसं २ | अब्भुट्ठिया [२]वांदणे

---

* देवसी आदिमें क्रमसे 'देवसिअस्स-पक्खिअस्स-चउमासिअस्स-संवच्छरिअस्स' कहना। १भावपूर्वक। २आत्मसाखे। ३गुरुसाखे विशेषनिंदके। ४निंदित-दोष। ५मन-वचन-काया।

[1]नाणंमि दंसणंमि य, चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि । आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ।१। ज्ञानाचार १, दर्शनाचार २, चारित्राचार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५, ए पंचविध आचारमांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष (चोमासी-संवच्छरी) दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणता हुओ होय ते सवि हु मन वचन कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ।१।

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार–काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिन्हवणे । वंजण-अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो ।१। ज्ञान कालवेलामांहि [2]पढ्यो गुण्यो परावर्त्यो नहीं, अकाले पढ्यो, विनय हीन[3] बहुमान हीन[4] योगोपधान हीन अनेरा कन्हे पढ्यो अनेरो गुरु कह्यो, देव वंदण वांदणे पडिक्कमणे सज्झाय करतां पढतां गुणतां कूडो अक्षर कह्यो, काने मात्राए आगलो ओछो भण्यो

---

१ इस गाथामें साधुके ज्ञानाचारादि पांचों आचारोंके नाम बतायेहैं । इसके आगे दूसरे तीसरे अतिचारमें ज्ञानाचार दर्शनाचारके ८-८ आचारोंके नामवाली १-१ गाथा रखके उसका अर्थ भाषामें वर्णवा है, चोथेमें १ गाथासे चारित्राचारका सामान्य वर्णन हैं, बाद पांचवें-छठे तथा सातवेंमें चारित्राचारकाही विशेष वर्णन है, आठवेंमें तपाचार और वीर्याचारका भेलाही वर्णन करके नवमेमें चरण सित्तरि करण सित्तरिके १४० अतिचारोंका मिच्छामि दुक्कडं दिया गया हैं । कठिन शब्दोंके अर्थ नीचे फुटनोटमें लिख दिये हैं ।
२ जिसजिस सूत्रके पढनेका जो जो काल बतायाहै उसमें । ३ ज्ञानवानूकी आज्ञा न मानना तथा पुस्तकादिकी आशातना करना आदि । ४ ज्ञानवानूके उपर अप्रसन्न मन रखना ।

गुण्यो, सूत्रार्थ–तदुभय कूडां कह्यां,काजो अणउद्धर्यो[१], दांडो अणपडिलेह्यां. वसति अणसोध्यां[२]. अणपवेयां[३].असज्झाय[४].अणोज्झाय.कालवेलामांहि[५] श्रीदशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत पढ्यो.गुण्यो. परावर्त्यो,अविधे योगोपधान कीधां. कराव्यां,ज्ञानोपगरण-पाटी.पोथी.ठवणी.कवली.नोकारवाली सांपडा[६]. सांपडी. दस्तरी. वही. कागलिया.ओलिया प्रते पग लाग्यो. थूंक लाग्यो.थूंके करी अक्षर भांज्यो,कन्हे छते आहार नीहार कीधो,ज्ञानवंत प्रते प्रद्वेष मच्छर वह्यो,अंतराय अवज्ञा आशातना कीधी, कुणहि प्रते तोतलो. बोबडो देखी हस्यो वितर्क्यो[७], मतिज्ञान. श्रुतज्ञान. अवधिज्ञान.मनः पर्यवज्ञान. केवलज्ञान. ए पांच ज्ञान तणी आशातना[८] कीधी,ज्ञानाचार विषइओ अनेरो०।२।

दर्शनाचारे आठ अतिचार-निस्संकिय निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढ दिट्ठी अ। उववूह-

१ निकाला नहीं. योग्य भूमीमें परठा नहीं । २ पडिलेहणके बाद उपासरेके चारों तरफ सौ सौ हाथ तककी भूमी देखे, और देखनेमें आये हुए हड्डि कलेवरादि उतनी भूमिमेंसे हटवादे, इसतरह वसति शोधेविना। ३ पडिलेहणके पीछेकी इरियावही करे बाद खमा० देके 'इच्छा० सदि० भग०! वसति पवेउं' इच्छं इच्छामि खमा० 'भगवन्! सुद्धा वसहि' ये दो आदेश मांगे विना। ४ धूल. लोहि. धूँअर आदिकी वर्षा तथा ग्रहण होना, तारा तूटना.अकाले बिजली गर्जारव होना आदि। ५ पढने आदिके लिये निषेधी हुइ चार कालवेला सांझ–सवेर–मध्यरात्रि तथा मध्यदिन। ६पुस्तक रखनेकी बडी ठवणी। ७ मस्करीसे हसा हो। ८ असद्दहणा(सत्य नहीं मानने) रूप।

थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अठ्ठ।१। देव. गुरु. धर्म.तणे विषे निःशंकपणो न कीधो,तथा एकांत निश्चय धर्यो नहीं, धर्म संबंधिया फल तणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नहीं, साधु साध्वी तणी निंदा. जुगुप्सा[1] कीधी,मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रभावना देखी,संघमांहे गुणवंत तणी अनुपबृंहणा[2] कीधी, अस्थिरी करण. अवात्सल्य. अप्रीति. अभक्ति. निपजावी,तथा देवद्रव्य [3]गुरुद्रव्य [4]साधारणद्रव्य भक्षित उपेक्षित कीधो, प्रज्ञाऽपराधे विणाश्यो विणसंतो उवेख्यो, छती शक्तिए सार संभाल न कीधी,ठवणायरिय हाथ थकी पाडिओ.पडिलेहवो विसार्यो.जिनभवन तणी चोराशी आशातना. गुरु प्रते तेत्रीश आशातना कीधी. दर्शनाचार विषइओ० ।३।

चारित्राचारे आठ अतिचार-पणिहाणजोगजुत्तो,पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं। एस चरित्तायारो, अठ्ठविहो होइ नायव्वो ।१। इरिया[5] समिति[6]१,भासा समिति २,एसणा[7]समिति ३,आदान भंडमत्त निख्खेवणा समिति४.उच्चार पासवण खेल जल्ल सिंघाण पारिठ्ठावणिया समिति५,मनोगुप्ति१,वचन

[1]बदनामि । [2]अप्रशंसा । [3]सात क्षेत्रमेंसे साधुके उपकरणादि वास्ते निकाला । [4]नामके विना धर्मादि निकाला।[5]चलते हुए रस्तेमें । [6]उपयोग । [7]शुद्धमान गोचरि आदिकी तलाश ।

गुप्ति २, कायगुप्ति ३, ए पांच समिति. त्रण गुप्ति. अष्ट प्रवचन माता रूडिपरे पाळी नहीं, साधुतणे धर्मे सदैव, श्रावक तणे धर्मे सामायिक पोसह लीधे जे कोइ खंडन विराधना कीधी होय, चारित्राचार विषइओ ० ४।

विशेषत श्चारित्राचारे तपोधन[1] तणे धर्मे–वयछक्कं कायछक्कं, अकप्पो गिहि भायणं । पलिअंक-निसिज्जाए, सिणाणं सोभ वज्जणं ।१। व्रतषट्के–पहिले महाव्रते प्राणातिपात सूक्ष्म. बादर. त्रस. थावर जीवतणी विराधना हुइ । बीजे महाव्रते क्रोध. लोभ. भय. हास्य लगे झुठो बोल्यो । तीजे अदत्तादान विरमण महाव्रते-सामि. जीवादत्तं, तित्थयर अदत्तं तहेव य गुरुहिं । एवमदत्तं चउहा, पन्नत्तं वीयराएहिं ।१। [2]स्वामी अदत्त. [3]जीव अदत्त. [4]तीर्थंकर अदत्त. [5]गुरुअदत्त. ए चतुर्विध अदत्तादान-मांहिं जे कोइ अदत्त परिभोगव्यो होय । चोथे महाव्रते-वसही[6] कह[7] निसि[8] जिंदिय[9], कुड्डिंतर[10] पुव्व-

१ तपस्यारूप धनवाले साधु । २ तृण आदि चीज उसके स्वामीने नहीं दी हुइ लेना । ३ वस्तुके स्वामीने देने परभी वस्तुमें रहे जीवकी रजा विना लेना जैसे सचित्त वस्तुको वहर लेना । ४ तीर्थंकरोंने निषेधा हुआ आधाकर्मी आदि लेना । ५ स्वामीने दी हुइ दोष रहित चीजको गुरुकी रजा विना वापरना । ६ वसति (उपासरेके आसपास देखनेमें आवे वैसी जगहमें स्त्री–पशु नपुंसकोंका रहवास न होना चहिये) । ७ कथा (एकली स्त्रियोंके आगे व्याख्यानादि करना या स्त्रीयोंके रूपशृंगारादिकी कथा करना आदि न करे) । ८ निषद्या (स्त्रीके साथ एक आसन पर बैठना न करे, स्त्रीके ऊठजाने परभी दों घडीतक उस जगह पर न बैठे) । ९ इंद्रिय (स्त्रीयोंके अंगोपांगोंकी तरफ एकाग्र दृष्टिसे न देखना) । १० कुड्यांतर(जहां बीचमें भींतही हो, भींतके पीछे सूते हुए स्त्री पुरुषके मैथुन आदिके शब्द सुननेमें आवे, वहां न रहना) ।

कीलिए[1] पणीए[2] । अईमायाहार[3] विभूसणाइं[4] , नवबंभचेर गुत्तिओ ।१। ए नव वाड सूधी पाली नहीं, सुहणे स्वप्नांतरे दृष्टि विपर्यास[5] हुओ । पंचमे महाव्रते–धर्मोपगरणने विषे इच्छा.मूर्च्छा.गृद्धि. आसक्ति धरी,अधिको उपगरण वावर्यो,पर्व तिथिए पडिलेहवो विसार्यो । छट्ठे रात्रि भोजन विरमण व्रते–असूरो[6] भातपाणी[7] कीधो,छारोद्गार[8] आव्यो,पात्रे.पात्राबंधे[9] तक्रादिकनो[10] छांटो लाग्यो,खरड्यो रह्यो,लेप.तेल.ओषधादिक तणो संनिधि[11] रह्यो,अतिमात्राये[12] आहार लीधो,ए छए व्रत विषइओ ०।५।

कायषट्के–गाम तणे पइसारे निसारे पग पडिलेहवा विसार्या,माटी मीठुं खडी धावडी अरणेटो[13] पाषाण तणी चातली[14] उपर पग आव्यो । अप्पकाय-वाघारी[15] फूसणा[16] हुआ,वहोरवा गया.उलखो हाल्यो,लोटो ढोल्यो, काचा पाणी तणा छांटा लाग्या । तेउकाय-वीज[17] दीवा तणी उजेही[18] हुइ । वाउकाय-उघाडे मुखे बोल्या,महावाय[19] वाजतां कपडा कांबली तणा छेडा साचव्या नहीं,फूंक दीधी ।

१ पूर्वक्रीडित (गृहस्थपणेमें भोगवे हुए भोगोंको याद न करना) । २ प्रणीत(विशेष पुष्टिकारक आहार न करना) । ३अतिमात्रा आहार (भूँखसे अधिक नहीं खाना) ।४विभूषण (शरीरकी तथा वस्त्र–पात्रादिकी शोभा नहीं करना)ये ब्रह्मचर्यकी नव वाड गुप्तियां हैं । ५ खराब नजर । ६ मोडा देरसे । ७ आहार पाणी । ८ गुचलका–डकार । ९झोली । १०छास आदिका । ११ संग्रह ।१२भूँखसे अधिक ।१३ मरडेका ढेफा ।१४छोटी चिताल(फापरली) । १५धूँअर आदिका ।१६फरस । १७बिजली ।१८ उजाला । १९जोरका वायरा ।

वनस्पतिकाय–नीलफूल[1] सेवाल[2] थड मूल फल फूल वृक्ष शाखा[3] प्रशाखा[4] तणा संघट्टा परंपर[5] निरंतर[6] हुआ। त्रसकाय-बेइंद्री तेइंद्री चउरिंद्री पंचेंद्री काग बग चग उडाव्या, ढोर त्रासव्या, डांडो देखाडी बालका बीहाव्या, षट्काय विषइओ अनेरो जे कोइ० ।६।

अकल्पनीय सिज्जा[7] वस्त्र पात्र पिंड[8] परिभोगव्यो, सिज्जातर तणो पिंड परिभोगव्यो, उपयोग[9] कीधा पाखे[10] वहोर्यो, धात्रीदोष[11] त्रस बीज संसक्त[12] पूर्वकर्म[13] पश्चात्कर्म[14] उद्गम[15] उत्पादना[16] दोष चिंतव्या नहीं। गृहस्थ तणो भाजन भांज्यो फोड्यो, वली पाछो आप्यो नहीं। सूतां संथारिया उत्तर पट्टा ढलता[17] रह्या। अधिको उपगरण वावर्यो। देशतः स्नान मुखे भीनो हाथ लगाड्यो, सर्वतः स्नान तणी वांछा कीधी, शरीर तणो मल फेड्यो[18] केश रोम नख समार्या, अनेरी कांइ राढी

१ वर्षादूसे भींजती हुइ भींत उपर या अगासी आदि हरएक चीज उपर जमी हुइ नील, जो पांचोंही रंगकी होतीहै। २ तलाव अथवा नदीके पडे हुए पाणी उपर जमी हुइ नील, जो जाडी दलदार होनेसे सूखनेपर कपडे जैसी होजातीहै। ३ मोटी डाल। ४ छोटी डालियां। ५ जिस चीजमें वनस्पति पडी हो उस चीजका या वृक्षआदि वनस्पतिको अडेहुए मनुष्य आदिका। ६ खास वनस्पतिका। ७ उपासरा ८ आहार–पाणी। ९ उपयोग काउस्सग्ग,या वहोरते समय शुद्धाशुद्धकी तरफ खयाल। १० विना। ११ बच्चोंको रमाना खेलाना आदि। १२ सहित या अडाहुआ। १३ वहरानेके लिये कच्चे पाणीसे हाथ आदि धोना। १४ वहराये बाद कच्चे पाणीसे हाथआदि धोना। १५ आधाकर्मी–उद्देशिकादि १६ दोष। १६ धात्री–दूतीआदि १६ दोष। १७ आगे–पाछे रहा, संथारियेके उपर बराबर उत्तरपट्टा नहीं आया। १८ मैल उतारा।

विभूषा कीधी, अकल्पनीय पिंडादि विषइओ अनेरो जे कोइ० ।७।

आवस्सय सज्झाए, पडिलेहण झाण भिक्ख अभत्तट्ठे। आगमणे नीगमणे, ठाणे निसीअणे तुअट्टे ।१।

आवश्यक-उभयकाल[1] व्याक्षिप्त[2] चित्तपणे पडिक्कमणो कीधो, पडिक्कमणामांहिं ऊंघ आवी, बेठां पडिक्कमणो कीधो। दिवस प्रते चारवार[3] सज्झाय सातवार[4] चैत्यवंदन न कीधा। पडिलेहण आघी पाछी भणावी, अस्तोव्यस्त[5] कीधी। आर्त[6] रौद्र[7] ध्यान ध्यायां, धर्म ध्यान शुक्ल ध्यान ध्यायां नहीं। गोचरी गया बेतालीस दोष उपजता चिंतव्या नहीं। जाणी छती शक्तिए पर्व तिथिए उपवासादिक तप कीधो नहीं। देहरा उपासरामांहिं पेसतां निसिही, नीसरतां आवस्सइ कहेवी विसारी। इच्छा मिच्छादिक दशविध चक्रवाल समाचारी साचवी नहीं, गुरु तणो वचन तहत्ति करी पडिवज्यो[8] नहीं, अपराध आव्यां मिच्छामि दुक्कडं दीधा नहीं। स्थानके रहेतां हरियकाय बीयकाय कीडीतणां नगरां सोध्यां

१ (सांझ–सवेर) दोनों वख्त। २ डामाडोल। ३ सवेरे पडिलेणके बाद १, संध्याको पडिलेहणके बीचमें २, देवसिय पडिक्कमणेके अंतमें अथवा पच्चख्खाण पारनेकी ३, राइय पडिक्कमणेके शुरुकी ४। ४ राइय पडिक्कमणेकी शुरुका १, 'परसमयतिमिरतरणि'का २ मंदिर दर्शनका ३ पच्चख्खाण पारनेका ४, आहार पाणीके बादका ५, देवसिय पडिक्कमणेकी शुरुका अथवा 'नमोऽस्तुवर्द्धमानाय'का ६, संथारा पोरिसीका ७। ५ करी न करी ऐसे विना ढंगसे। ६ आगेकी चिंता। ७ दूसरेके उपर मारने पीटने आदिके परिणाम। ८ स्वीकारा।

नहीं। ओघो मुहपत्ती चोलपट्टो संघट्टियो।स्त्री तिर्यंच तणा संघट्टा अनंतर परंपर हुआ। वडा प्रतें पसाओ करी लघु प्रते इच्छकार इत्यादिक विनय साचव्यो नहीं, साधु समाचारी विषइओ अनेरो जे कोइ०८

वय[1] समणधम्म[2] संजम[3], वेयावच्चं[4] च बंभगुत्तीओ[5]। नाणाइतिय[6] तव[7] कोह[8], निग्गहा इइ चरणमेयं।१। पिंडविसोही[9] समिई[10], भावण[11] पडिमा[12] य इंदिय[13] निरोहो। पडिलेहण[14] गुत्तीओ[15], अभिग्गहा[16] चेव करणं तु।२। एवंकारे साधुतणे धर्मे एकविध असंयम तेत्रीश आशातना प्रमाद पद पर्यंत मूलगुण उत्तरगुणके [17] एकसो चालीस अतिचार ([18] श्रावक तणे धर्मे समकित मूल बारे व्रतके एकसो चोवीस अतिचार)मांहिं जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहिं०।९।

---

१ महाव्रत पांच। २ श्रमण धर्म-क्षमादि दश प्रकारका। ३ संयम सतरे प्रकारका। ४ वेयावच्च (सेवा भक्ति) आचार्यादि दशकी। ५ ब्रह्मचर्यकी नववाड। ६ ज्ञानादि त्रिक-ज्ञान दर्शन चारित्र। ७ बारे प्रकारका तप। ८ क्रोध-मान माया-लोभका निग्रह करना (हटाना) यह चरण सित्तरी है। ९ पिंड विशोधि (आहारादिकी शुद्धि)। १० समिति पांच। ११ भावना अनित्यादि बारे। १२ बारे प्रतिमा। १३ पांचों इंद्रियोंका निरोध-अपने अपने विषयोंसे रोकना। १४ पडिलेहणा पच्चिस-शरीर तथा वस्त्रादिकी। १५ गुप्तियां तीन। १६ अभिग्रह-द्रव्य क्षेत्र काल भावसे। यहही करण सित्तरी है। १७ 'चरण सित्तरी-करण सित्तरीके' ऐसा भी कितनेक बोलते हैं। १८ श्रावक साथमें होवे तो यह ब्राकीट ( )मेंका पाठ बोलना, अन्यथा नहीं।

तीर्थंकरोंको,और,संघको । [1]अतीर्थसिद्धोंको,तथा,[2]तीर्थसिद्धोंको,फेर । [3]सिद्धोंको,और,केवलीयोंको[4],तथा,साधुओंको। मोटे [5]साधुओंको,

[1]तित्थंकरे,अ,तित्थे । अतित्थसिद्धे,अ,तित्थसिद्धे,अ ॥ सिद्धे, अ. जिणे, अ, रिसी । महरिसी,

ज्ञानकुं, फेर, वांदताहूं ।१। जो,इसकुं[6],गुणरूप,रत्नोंके, समुद्र । नहीं विराधके, तिरगयेहैंसंसारको । उनको[7],मंगल[8], करके।

[3]नाणं, [2]च, [4]वंदामि ॥१॥ [1]जे, [3]इमं, [2]गुण,रयण,सायर। [4]मविराहिऊण,तिण्ण संसारा॥ ते.मंगलं,कत्तिा।

मैंभी, [9]आराधनाके, सन्मुखहूं ।२। मेरेको,मंगलहो, अरिहंत। सिद्ध, साधु, श्रुत(ज्ञान), और, (चारित्र)धर्म,फेर। क्षांति(क्षमा),

अहमवि आराहणा,ऽभिमुहो ॥२॥ [2]मम,मंगल, [1]मरिहंता । सिद्धा,साहू, सुअं, च, धम्मो, अ ॥ खंती,

गुप्ति३,मुक्ति[10]। आर्जव(सरल)ता,मार्दव[11],निश्चय। ३। लोकमें, संयमवाले,जिसकुं, करतेहैं। मोटे ऋषिने, कहीहुइ,उदार(अच्छी)।

गुत्ती,मुत्ती । अज्जवया, मद्दवं, चेव ॥३॥ [3]लोगम्मि,संजया, [2]जं, [4]करिंति। [1]परमरिसि,देसिय, [5]मुआरं ॥

मैंभी, उपस्थित(तयार)हूं,उस । महाव्रत उच्चारणाकुं,करनेकेलिये ।४। अब[12],कितने तरहकी,वह, महाव्रतउच्चारणाहै ?,

[6]अहमवि, उवट्ठिओ, [5]तं । [7]महव्वय उच्चारणं, काउं ॥४॥ से, किं, तं,महव्वयउच्चारणं ?

---

१ तीर्थंकरोंने तीर्थ (चतुर्विध संघ)की स्थापना करे पहले सिद्ध होनेवाले। २ उसी तीर्थकी स्थापना हुए बाद सिद्ध होनेवाले। ३ तीर्थ–अतीर्थ सिद्धोंको छोडके शेष 'गृहीलिंग सिद्ध' आदितेरे भेदसे सिद्ध होनेवाले। ४ केवलज्ञान पाये बाद इस मनुष्यभवमें विचरनेवाले 'भवस्थ केवलीयों'को। ५ लब्धिवंत। ६ चारित्रकुं। ७ मुनियोंको ८ वंदनादिरूप। ९ चारित्रकी। १० निर्लोभता। ११ अभिमान रहित नरमाइ। १२ शिष्य पूछता है।

[1]महाव्रतउच्चारणा, पांच प्रकारकी,बतलाइहै,रात्रिभोजनका,विरमण(त्याग),छठाहैजिसमें,वहइसतरहहै–सबतरहके, प्राणातिपात(हिंसा)से,
महव्वय उच्चारणा,पंचविहा,पन्नत्ता,राइभोअण, वेरमण, छट्ठा, तंजहा–सव्वाओ,पाणाइवायाओ,
निवर्तना १। सबतरहके,मृषावाद(झूंटबोलने)से, निवर्तना २। सब तरहके, अदत्तादान(न दिया लेने)से, निवर्तना ३। सबतरहके,
वेरमणं १।सव्वाओ, मुसावायाओ, वेरमणं २। सव्वाओ, अदिन्नादाणाओ, वेरमणं ३। सव्वाओ,
मैथुन(कुशील)से, निवर्तना ४। सबतरहके, परिग्रह(धनादि)से, निवर्तना ५। सबतरहके, रात्रिभोजनसे, निवर्त्तना ६।
मेहुणाओ, वेरमणं४। सव्वाओ,परिग्गहाओ, वेरमणं ५। सव्वाओ,राइभोअणाओ,वेरमणं ६।

वहां[2], निश्चय,पहले,हे भगवन् !,महाव्रतमें,प्राणातिपात(हिंसा)से,निवर्तनाहै[3]। सबतरहके,हेभगवन् ! प्राणातिपातकुं,पच्चख्खता(त्यागता)हूं,
[1]तत्थ,खलु,[3]पढमे,[2]भंते !,[4]महव्वए,पाणाइवायाओ,वेरमणं। [6]सव्वं,[5]भंते !,[7]पाणाइवायं,पच्चख्खामि,
वे(जीव),सूक्ष्म[4],या,बादर[5],अथवा,त्रस[6], या, स्थावर[7],नहींज,(मैं)स्वयं,प्राणोंका,अतिपात(नाश)करूं,नहींज,दूसरोंसे, प्राणोंका,अतिपात(नाश)
से, सुहुमं,वा,बायरं, वा,तसं,वा,थावरं वा,नेव,सयं, पाणे, अइवाएज्जा, नेव,ऽन्नेहिं, पाणे, अइवाया-
कराऊं,प्राणोंका,अतिपातकरतेहुएभी,दूसरोंको,नहीं, अनुमोदूं(भलासमझूं),जबतकजीवूंतबतक,त्रिविध[8]कुं,त्रिविधकरके,मनसे,वचनसे, कायासे,
विज्जा,पाणे, अइवायंतंवि, अन्ने, न,समणुजाणामि,जावज्जीवाए,तिविहं,तिविहेणं,मणेणं,वायाए,काएणं,

१गुरु उत्तर देते हैं। २महाव्रत उच्चारणामें। ३ऐसा भगवतने कहा हैं वास्ते। ४जो आंखसे देखनेमें न आवे। ५ जो देखनेमें आवे। ६ बेइंद्रियादि। ७ स्थिर रहनेवाले। ८ प्राणातिपात।

नहीं, करूं, नहीं, कराऊं, करतेहुएभी, अन्यकुं, नहीं, अनुमोदूं (भला समझूं), उसकुं[१], हेभगवन् !, पडिक्कमताहूं[२], निंदताहूं, गर्हताहूं,
न, करेमि, न. कारवेमि, करंतंपि, अन्नं, न, समणुजाणामि, [८]तस्स, [९]भंते !, [१०]पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि,
[३]आत्माकुं, वोसिराताहूं। वह, प्राणातिपात, चारतरहका, कहाहै, वे भेद ये है–द्रव्यसे, क्षेत्रसे, कालसे, भावसे।
अप्पाणं, वोसिरामि। [१]से, पाणाइवाए, चउव्विहे, पन्नत्ते, तंजहा-दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ।
द्रव्यसे, प्राणातिपात[४], छतरहके, जीवोंके, समुदायमें[५]। क्षेत्रसे, प्राणातिपात, सब लोकमें। कालसे, प्राणातिपात,
दव्वओणं, पाणाइवाए-छसु, जीव, निकाएसु। खित्तओणं, पाणाइवाए, सव्वलोए। कालओणं, पाणाइवाए-
दिनमें, चाहे, रात्रिमें। भावसे, प्राणातिपात, रागसे, अथवा, द्वेषसे, जो, भी, फेर, मैंने, इस, धर्मको (पाये), केवलीके,
दिया, वा, राओवा। भावओणं, पाणाइवाए, रागेण, वा, दोसेणवा, जं, पि, य, मए, [३]इमस्स, धम्मस्स, [२]केवलि,
कहे हुए। जीवरक्षा, लक्षणवाले। सत्यसे अधिष्ठित (आश्रित)। विनय, मूलवाले। क्षांति (क्षमा), प्रधानवाले। नहीं हिरण्य (रूपा),
पन्नत्तस्स। अहिंसा, लक्खणस्स। सच्चाऽहिट्ठियस्स। विणय, मूलस्स। खंति, प्पहाणस्स। अहिरण्ण,
सोनेके दागिनेवाले। उपशमसे, पैदा होनेवाले। नव (वाड) ब्रह्मचर्यसे, रक्षित। अपचमान[६]। भिक्षाकी, वृत्ति (जीविका) वाले।
सोवण्णिअस्स। उवसम, प्पभवस्स। नवबंभचेर, गुत्तस्स। अपयमाणस्स। भिक्खा, वित्तिअस्स। ॥१.३८॥

---

१ हिंसारूप पापकुं। २ उससे पीछा हटताहूं। ३ पापकारी मेरी। ४ वह है- जो। ५ होता है। ६ पचन पाचनादि आरंभ रहित।

कुक्षि (पेट)मेंही, भातेवाले[1]। नहीं अग्निके शरणवाले[2]। ×सम्यग्धोडालनेवाले। त्यागकियेंद्वेष[3]वाले। गुणग्रहणस्वभाववाले। निर्विकारचित्तवाले[4]।
कुख्खी.संबलस्स। निरग्गि सरणस्स। संपख्खालियस्स। चत्तदोसस्स। गुणग्गाहियस्स। निव्वियारस्स।

निवृत्ति[5]लक्षणवाले। पांच महाव्रतोंसे युक्त(सहित)। नहीं संनिधि[6]के संचय[7]वाले। नहीं विसंवादवाले[8]। संसारसे पार
निव्वित्ती लख्खणस्स। पंच महव्वय जुत्तस्स। असंनिहि संचयस्स। अविसंवाइयस्स। संसार पार

पहूंचानेवाले। निर्वाणगमनरूप, पर्यवसान(अंतिम), फलवाले। पहले, अज्ञानतासे, अश्रवणता(न सुनने)से, अबोधितासे[9], नहीं स्वी-
गामियस्स। निव्वाणगमण, पज्जवसाण, फलस्स। [४]पुव्विं, अण्णाणयाए, असवणयाए, अबोहियाए, अणऽ-

कारनेसे, [10]स्वीकारनेसे, अथवा, [11]प्रमादसे, रागद्वेषकी, प्रतिबद्ध(व्याकुल)तासे, बालभावसे, मोहपणेसे, मंदता(आलस्य)से, क्रीडाभावसे,
भिगमेणं, अभिगमेण, वा, पमाएणं, रागदोस, पडिबद्धयाए, बालयाए, मोहयाए, मंदयाए, किड्डयाए,

तीन गारवोंकी, गुरुता(भार)से, चार कषायोंके प्राप्त होनेसे, पांचों इंद्रियोंके, वश, आर्त(दुःख)से, (कर्मके)प्रतिपूर्ण(पूरे), भारिपणेसे, साता सौख्यको
तिगारव, गरुयाए, चउक्कसाओवगएणं, पंचिंदियो, वस, ऽट्टेणं, पडिपुन्न*, भारियाए, साया सोख्ख

---

१ पेटमें खा सके. उससे अधिक लाके रात्रिमें रखनेका जिसमें निषेध है। २ ठंडसे पीडाते हुए भी अग्नि तापनेकी मना है। × कर्मरूप मलको। ३ अथवा मिथ्यात्वादि दोष। ४ कामके उन्मादसे रहित। ५ सर्वसावद्य योगका त्याग ६ आहारादि। ७ संग्रह। ८ जिसमें पूर्वापर विरोध रहित कथन है। ९ नहीं जाननेसे। १० या अनादरपूर्वक। ११ विषय–कषायादि। * अन्य पुस्तकोंमें 'पडुप्पन्नभारियाए' ऐसा पाठांतर है, इसका अर्थ यह है–(उपर कहे कारणोंसे)उत्पन्न हुए(कर्मके)भारीपणेसे।

अनुपाल(अनुभव)ते हुए, इस, चाहे, भवमें, अन्य, अथवा, भवोंके ग्रहणमें,प्राणातिपात(जीववध),कराहो, चाहे, करायाहो,
मणुपालयंतेणं, [6]इहं,[5]वा, [7]भवे,[8]अन्नेसु,[9]वा,[10]भवग्गहणेसु,पाणाइवाओ,[12]कओ,[11]वा,[14]काराविओ,
अथवा, कियाजाता, या, दूसरोंसे,अनुमोदा(भलाजाणा)हो,इसकुं, निंदताहूं, गर्हताहूं, त्रिविधकुं,त्रिविधकरके, मनसे, वचनसे,
[13]वा,[16]कीरंतो,[15]वा, परेहिं, [17]समऽणुन्नाओ, तं, निंदामि,गरिहामि,तिविहं,तिविहेणं,मणेणं,वायाए,
कायासे,अतीत(वीते)हुए,निंदताहूं, वर्तमानमेंहुएकुं,संवर(रोक)ताहूं,अनागत[1]कुं, त्याग करताहूं, सर्व, प्राणातिपातकुं, जबतक जीवूं
काएणं, अईयं,[19]निंदामि, पडुप्पन्नं, संवरेमि, अणागयं,पच्चक्खामि,[18]सव्वं,पाणाइवायं,[20]जावज्जी-
तबतक, अनिश्रित[2], मैं,नहींज,स्वयं(पोते),प्राणोंकुं,अतिपातूं(विनाशूं),नहींज,दूसरोंसे,प्राणोंकुं,अतिपाताऊं(विनाशाऊं), प्राणोंकुं,अतिपात-
वाए,अणिस्सिओ,ऽहं,नेव,सयं, पाणे, अइवाएज्जा, नेव,ऽन्नेहिं, पाणे, अइवायावेज्जा, पाणे, अइवा-
(विनाश)तेभी,दूसरोंकुं,नहीं,अनुमोदूं(भला समझूं),वह[3]इसतरहहै, अरिहंतकी, साक्षिसे १, सिद्धोंकी साक्षिसे २, साधुकी साक्षिसे ३,
यंते वि. अन्ने, न,समऽणुजाणिज्जा,तं जहा, अरिहंत,सक्खिअं१,सिद्धसक्खिअं २,साहुसक्खिअं३,
[4]देवकी साक्षिसे ४, आत्माकी साक्षिसे ५,इसतरह, होताहै,भिक्षु(साधु)हो,चाहे,भिक्षुकी(साध्वी)हो,चाहे, संयत[5], विरत[6],प्रतिहत(नाश),
देवसक्खिअं ४,अप्पसक्खिअं ५, एवं,[25]भवइ.[22]भिक्खु, वा,भिक्खुणी,[21]वा,[24]संजय,विरय,पडिहय,

[1] नहीं आये कालके प्राणातिपात।

२ इसलोक या परलोकके सुखादिकी इच्छा रहित। ३ प्राणातिपातका त्याग पांच साक्षिसे। ४ सम्यग्दृष्टि शासनाधिष्ठायकादि। ५ सतरह भेदे संयमी। ६ बारे भेदे तपमें विशेष रक्त।

मैं,रहा हो,चाहे,सुताहो,चाहे,जागताहुआहो(तोभी), यह,
त्यागकिये, पापकर्मवाला, दिनमें, चाहे,रात्रिमें,अथवा,एकलाहो,चाहे, पर्षदा[1]
पच्चक्खाय,पावकम्मे, [23]दिआ,वा,राओ,वा, एगओ, वा,परिसा,गओ,वा, सुत्ते वा,जागरमाणे वा, [27]एस,
निश्चय, प्राणातिपातका, रोकना, हितहै,सुखहै,क्षम(योग्य)है निःश्रेयसिकहै[2], आनुगामिक[3]है, पारगामिक[4]है, सब, [5]प्राणीओंको,
[26]खलु, [28]पाणाइवायस्स,वेरमणे,हिए,सुहे, खमे,निस्सेसिए, आणुगामिए,पारगामिए,सव्वेसिं,पाणाणं,
सर्व, (एकेंद्रिय)भूतोंको, सब, [6]जीवोंको, सब [7]सत्वोंको, नहीं दुःख देकरके, नहीं शोक पैदा करके,नही जीर्ण[8]करके,
सव्वेसिं. भूयाणं, सव्वेसिं,जीवाणं, सव्वेसिं, सत्ताणं, अदुक्खणयाए,असोयणयाए, अजूरणयाए,
नहीं आंसु निकलाके, [9]नहीं पीडा करके,नहीं चोतरफसे ताप करके,नहीं उपद्रव(तकलीफ)करके,मोटे अर्थवाला,मोटे गुणवाला,मोटे प्रभाववाला,
अतिप्पणयाए, अपीडणयाए, अपरियावणयाए, अणुद्दवणयाए, महऽत्थे, महागुणे, महाऽणुभावे,
[×]मोटे पुरुषोंसे अनुचीर्ण[10],मोटे ऋषि[×]का,कहाहुआ,प्रशस्त(शुभ)है,वह[11], दुःखक्षयके लिये, कर्मक्षयके लिये मोक्षप्राप्तिकेलिये, बोधि-
महापुरिसाऽणुचिन्ने,परमरिसि,देसिए, पसत्थे, तं, दुक्खक्खयाए,कम्मक्खयाए, मोक्खयाए, बोहि-

१ साधु समुदाय। २ मोक्षका हेतु हैं ३ भवांतरमें सुखदायि। ४ भवसे पार लेजानेवाला। ५ पंचेंद्रिय अथवा बेइंद्री-तेइंद्री-चउरिंद्री। ६ चार गतिके, देवता-नारकी-उत्तम नर और असंख्य वर्षके आयुषवाले मनुष्य तथा तिर्यच। ७ लोक उपकारके हेतुभूत सत्व(शक्ति)वंत, अथवा सोपक्रमी आयुषवाले मनुष्यादि। ८ लकडी आदिके प्रहारसे या भूंखसे अशक्त। ९ मारपीट आदिसे। × तीर्थंकरादि। १० आचरित। ११ प्राणातिपात विरमण व्रत।

लाभके लिये,संसारसे उतारनेकेलिये(होगा),ऐसा करके[1], (इसव्रतकु)अंगीकार करके,विचर(वर्त)ताहूं। पहेले, हे भगवन् !, महाव्रतमें,
लाभाए, संसारु त्तारणाए, त्ति कट्टु, उवसंपज्जित्ताणं, विहरामि।[30]पढमे,[29]भंते !,[31]महव्वए,
उपस्थित(प्राप्त)हूं, [2]सबतरहके, प्राणातिपात(हिंसा)से,विरमण(निवृत्ति) है।१।
उवट्ठिओमि,सव्वाओ, पाणाइवायाओ, वेरमणं ॥१॥
अब, अन्य, दूसरे, हेभगवन् !, महाव्रतमें, मृषावाद(झूंट)से,विरमणा है। सबतरहके,हे भगवन् !, मृषावादकुं,त्यागताहूं, वह(झूंट),
[1]अहा,[3]ऽवरे,दोच्चे,[2]भंते !,[4]महव्वए,मुसावायाओ,वेरमणं।[6]सव्वं,[5]भंते !,[7]मुसावायं,पच्चक्खामि,से.
क्रोधसे, या, लोभसे, वा,डरसे,या,हँसी(मस्करी)से,नहींज,स्वयं,मृषा, बोलूं, नहींज,दूसरोंसे,मृषा, बोलाऊं, मृषा,बोलतेहुएभी,अन्योंकुं,
कोहा,वा,लोहा,वा,भया,वा, हासा वा,नेव,सयं,मुसं,वएज्जा,नेव,ऽन्नेहिं,मुसं,वायावेज्जा,मुसं,वयंतेवि,अन्ने,
न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि
करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि[8]तस्स[9]भंते ! [10]पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।
से मुसावाए[×] चउव्विहे पन्नत्ते,तंजहा–दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ,दव्वओणं मुसावाए

१ इसवास्ते। २ अबसे मेरे। × मृषावाद (झूंट बोलना)।

सव्व दव्वेसु[1], खित्तओणं मुसावाए लोए (लोकमें) वा अलोए (अलोकमें) वा, कालओणं मुसावाए दिआ वा राओ वा, भावओणं मुसावाए रागेण[2] वा दोसेण[3] वा जंपि य मए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लख्खणस्स सच्चाहिठ्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्ण-सोवण्णिअस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिख्खावित्तिअस्स कुख्खी-संबलस्स निरग्गिसरणस्स संपख्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्ति-लख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण-गमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विं अण्णाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणऽभिगमेणं अभिगमेण वा पमाएणं राग दोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्क-साओवगएणं पंचिंदिओवसऽट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोख्खमणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसु

१ द्रव्योंमें, धर्मास्तिकाय–अधर्मास्तिकाय आदि छ द्रव्योंकी विरुद्ध प्ररूपणा करनी। २रागसे–माया और लोभ रागके भेद होनेसे गोचरि आदि काम–काजमें आलसके कारण कहेकि 'मेरा पग दूखता है' या बिमार न हो तोभी 'मैं बिमार हूं' इत्यादि बोलना मायासे झूंट है। अच्छे आहारके वास्ते लूखे सूखे शुद्ध आहारको अशुद्ध बताना लोभसे झूंट [illegible] कहना क्रोधसे झूट है। खुद विद्वान न हो तोभी 'मैं विद्वान हूं' इत्यादि कहना मानसे झूंट है।

वा भवग्गहणेसु मुसावाओ (मृषावाद) भासिओ (बोलाहो) वा भासाविओ (बोलाया हो) वा भासिज्जंतो (बोला जाता) वा परेहिं समणुन्नाओ, तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, अईयं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि, सव्वं मुसावायं, जावज्जीवाए अणिस्सिओऽहं, नेव सयं मुसं वएज्जा, नेवऽन्नेहिं मुसं वायाविज्जा, मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तंजहा- अरिहंत सक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं एवं भवइ, भिक्खु वा भिक्खुणी वा, संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे, दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा। एस खलु मुसावायस्स (मृषावादका) वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाऽणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि। दोच्चे भंते!

महव्वए उवाढ्ढिओमि, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ।२।

अहाऽवरे तच्चे (तीसरे) भंते! महव्वए अदिन्नादाणाओ (अदत्तादान–चोरीसे) वेरमण। सव्वं भंते! अदिन्नादाणं (अदत्तादानकुं) पच्चख्खामि, से गामे (गाममें) वा नगरे (नगरमें) वा रण्णे (अरण्य[1]में) वा अप्पं ([2]अल्प थोडा)वा बहुं (बहुत) वा अणुं वा ([3]छोटो या) थूलं (मोटी वस्तु) वा चित्तमंतं (जीव सहित) वा अचित्तमंतं (जीव रहित) वा नेव सयं अदिन्नं (अदत्तकुं)गिण्हिज्जा(ग्रहण करूं) नेव ऽन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा (ग्रहण कराऊं) अदिन्नं गिण्हंते वि(ग्रहण करतेभी) अन्ने न समऽणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नं न समऽणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। से अदिन्नादाणे (अदत्तादान) चउव्विहे पन्नत्ते,तंजहा–दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ। दव्वओणं अदिन्नादाणे[4] गहण धारणिज्जेसु(ग्रहण–धारणके योग्य)दव्वेसु(द्रव्योमें)खित्तओणं अदिन्नादाणे गामे वा नगरे वा रण्णे वा, कालओणं अदिन्नादाणे दिआ वा राओ वा, भावओणं

१ अटवी (सीम)। २ वजनके प्रमाणसे। ३ लंबाइ चोडाइ आदि मापमें। ४ नहीं दिये हुए को लेना–चोरी।

अदिन्नादाणे रागेण वा दोसेण वा. जंपि य मए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लक्ख-
णस्स सच्चाऽहिट्ठियस्स विणय मूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवण्णिअस्स उवसमप्पभवस्स
नव बंभचेर गुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खा वित्तिअस्स कुक्खी संबलस्स निरग्गिसरणस्स संप-
क्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्ति लक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स
असंनिहि संचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपार गामियस्स निव्वाणगमण पज्जवसाण फलस्स पुव्विं
अण्णाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणऽभिगमेणं अभिगमेण वा पमाएणं रागदोस पडिबद्धयाए
बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव गरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचिंदिओवसट्टेणं
पडिपुन्न भारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु अदिन्नादाणं
गहियं (ग्रहण किया हो) वा गाहावियं (ग्रहण कराया हो) वा घिप्पंतं (ग्रहण किये जातेकुं) वा परेहिं समऽणुन्नायं,
(अनुमोदाहो) तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयं निंदामि पडुप्पन्नं
संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं अदिन्नादाणं जावज्जीवाए अणिस्सिओऽहं नेव सयं अदिन्नं

गिण्हिज्जा, नेवऽन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा, अदिन्नं गिण्हंते वि अन्ने न समऽणुजाणिज्जा, तंजहा अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं। एवं भवइ भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे, दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसा गओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, एस खलु अदिन्नादाणस्स (अदत्तादानका) वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महऽत्थे महागुणे महाऽणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, तच्चे भंते! महव्वए उवट्ठिओमि, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं।३।

अहाऽवरे चउत्थे (चोथे) भंते! महव्वए मेहुणाओ (मैथुन-कुशीलसे) वेरमणं सव्वं भंते! मेहुणं (मैथुनकं) पच्चक्खामि, से दिव्वं (देव संबंधी) वा माणुसं (मनुष्य संबंधी) वा तिरिक्ख जोणियं (तिर्यंचयोनि संबंधी)

वा नेव सयं मेहुणं सेविज्जा (सेवूं) नेवऽन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा (सेवावूं) मेहुणं सेवंतेवि (सेवते भी) अन्ने न समऽणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करं-तंपि अन्नं न समऽणुजाणामि तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

से मेहुणे (मैथुन) चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा—दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओणं मेहुणे रूवेसु[1] वा रूवसहगएसु[2] वा, खित्तओणं मेहुणे उड्ढलोए (ऊर्ध्व-ऊंचे-लोकमें) वा अहोलोए[3] वा तिरियलोए[4] वा, कालओणं मेहुणे दिआ वा राओ वा, भावओणं मेहुणे रागेण वा दोसेण वा, जंपि य मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाऽहिट्ठियस्स विणय मूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहि-रण्णसोवण्णिअस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तिअस्स कुक्खी संबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्ति लक्खणस्स पंच महव्वय जुत्तस्स असंनिहि संचयस्स अविसंवाइयस्स संसार पार गामियस्स

१. रूपमें (प्रतिमा चित्रादि या आभूषणरहित स्त्री आदिमें)। २ रूप सहगत (आभूषणसहित स्त्री आदि) में। ३ अधो (नीचे) लोकमें। ४ तिर्यग् लोकमें।

निव्वाण गमण पज्जवसाण फलस्स पुव्विं, अण्णाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणऽभिगमेणं अभिगमेण वा पमाएणं राग दोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव गरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचिंदियो वसऽट्टेणं पडिपुन्न भारियाए साया सोक्ख मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु मेहुणं सेवियं(सेवा हो)वा सेवावियं(सेवाया हो)वा सेविज्जंतं(सेवे जातेकुं) वा परेहिं समणुऽन्नायं तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अईयं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सिओऽहं नेव सयं मेहुणं सेविज्जा नेवऽन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तंजहा–अरिहंत सक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं एवं भवइ भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसा-गओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, एस खलु मेहुणस्स (मैथुनका) वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्ख-

णयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महऽत्थे महागुणे महाऽणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि देसिए पसत्थे. तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, चउत्थे भंते! महव्वए उवट्ठिओमि, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ।४।

अहाऽवरे पंचमे (पांचमे) भंते ! महव्वए परिग्गहाओ ([1]परिग्रहसे) वेरमणं, सव्वं भंते ! परिग्गहं (परिग्रहकुं) पच्चक्खामि, से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, नेव, सयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा[2], नेवऽन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा[3], परिग्गहं परिगिण्हंते वि[4] अन्ने न समऽणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं न करेमि, न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समऽणुजाणामि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

से परिग्गहे (परिग्रह) चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा–दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओणं

१ धन–धान्यादि नव प्रकारके। २ चोतरफसे ग्रहण करूं। ३ चोतरफसे ग्रहण कराऊं। ४ चोतरफसे ग्रहण करतेभी।

परिग्गहे सचित्ताऽचित्तमीसेसु[1] दव्वेसु, खित्तओणं परिग्गहे लोए वा अलोए वा, कालओणं परिग्गहे दिआ वा राओ वा, भावओणं परिग्गहे अप्पऽग्घे[2] वा महऽग्घे[3] वा, रागेण वा दोसेण वा जंपि य मए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लक्खणस्स सच्चाऽहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंति-प्पहाणस्स अहिरण्ण सोवण्णिअस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खा-वित्तिअस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहियस्स निव्वि-यारस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पंच महव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसार पार गामियस्स निव्वाणगमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विं अण्णाणयाए असवणयाए अबोहियाए अण-ऽभिगमेणं अभिगमेण वा पमाएणं राग दोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव गरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचिंदिओवसऽट्टेणं पडिपुन्न भारियाए सायासोक्खमणु पाल-यंतेणं इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु परिग्गहो(परिग्रह)गहिओ(ग्रहण कराहो)वा गाहाविओ (ग्रहण

१ सचित्त अचित्त और मिश्र रूपी अरूपी धर्मास्तिकायादि सब द्रव्योंमें। २ थोडे मोल(कीमत)वाली वस्तुमें। ३ महामूल्य(घणी कीमत)वाली वस्तुमें।

करायाहो)वा घिप्पंतो(ग्रहण किया जाता)वा परेहिं समणुन्नाओ(अनुमोदा हो)तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं,अईयं निंदामि, पडुप्पन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चक्खामि सव्वं परिग्गहं (परिग्रहकुं) जावज्जीवाए अणिस्सिओऽहं, नेवसयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा, नेवऽन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहं परिगिण्हंते वि अन्ने न समऽणुजाणिज्जा तंजहा—अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं एवं भवइ भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे,दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा,एस खलु परिग्गहस्स(परिग्रहका)वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महऽत्थे महागुणे महाऽणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे,तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि,पंचमे भंते! महव्वए उवट्ठिओमि,सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ।५।

अहाऽवरे छट्ठे भंते! वए(व्रतमें) राईभोअणाओ (रात्री भोजनसे) वेरमणं, सव्वं भंते! राईभोअणं पच्चक्खामि, से असणं (अशन[1]कुं) वा पाणं (पान[2]कुं)वा खाइमं (खादिम[3]कुं) वा साइमं(स्वादिम[4]कुं) वा,नेव सयं राइं(रात्रिमें)भुंजेज्जा (भोजन करूं)नेवऽन्नेहिं राइं भुंजावेज्जा(भोजन कराऊं)राइं भुंज्जंते वि (भोजन करतेभी) अन्ने न समऽणुजाणामि,जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं,मणेणं वायाए काएणं, न करेमि,न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समऽणुजाणामि तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

से राईभोअणे (रात्रिभोजन) चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा—दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ,दव्वओणं राईभोअणे—असणे(अशनमें)वा पाणे (पानी आदिमें) वा खाइमे(खादिममें)वा साइमे (स्वादिममें) वा,खित्तओणं राईभोअणे—समयखित्ते ([5]समय क्षेत्रमें), कालओणं राईभोअणे—दिआ वा राओ वा, भावओणं राईभोअणे—तित्ते (तीखे रसमें) वा कडुए (कडवे रसमें) वा कसाए (कषायले(तूरे)रसमें) वा अंबिले (खट्टेरसमें) वा महुरे(मधुर मीठे रसमें)वा लवणे(लूणके खारे रसमें)वा रागेण वा दोसेण वा,जंपि य मए इमस्स धम्मस्स

---

१ रोटी भात दाल शाक आदि। २ पीने लायक पाणी आदि। ३ खाने योग्य खजूर आदि मेवा। ४ स्वाद लेने योग्य सोपारी—इलायची आदि। ५ अढ़ाइ द्वीप और दो समुद्र प्रमाण।

केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लक्खणस्स सच्चाऽहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्ण-
सोवण्णिअस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तिअस्स कुक्खी-
संबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्ति-
लक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण-
गमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विं अण्णाणयाए असवणयाए अबोहियाए अणऽभिगमेणं अभिगमेण
वा पमाएणं राग दोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्क-
साओवगएणं पंचिंदिओवसऽट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसु
वा भवग्गहणेसु राईभोअणं भुत्तं(खायाहो) वा भुंजावियं (खवरायाहो) वा भुजंतं (खाये जातेकुं) वा परेहिं
समऽणुन्नायं, तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं.अईयं निंदामि पडुप्पन्नं
संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि, सव्वं राईभोअणं,जावज्जीवाए अणिस्सिओऽहं.नेव सयं राईभोअणं
भुंजेज्जा, नेवऽन्नेहिं राईभोअणं भुंजावेज्जा, राईभोअणं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तंजहा-

अरिहंत सक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं एवं भवइ, भिक्खु
वा भिक्खुणी वा, संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे, दिआ वा राओ वा एगओ वा
परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा। एस खलु राईभोअणस्स (रात्रि भोजनका) वेरमणे हिए सुहे
खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं जीवाणं
सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-
णयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाऽणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे
तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ताणं
विहरामि, छट्ठे भंते! वए उवट्ठिओमि, सव्वाओ राईभोअणाओ वेरमणं ।६।

इसतरह ये, पांच महाव्रतोंको। रात्रिभोजन,विरमण(निवृत्ति),छठेवाले। आत्महितके वास्ते। अंगीकार करके, विहरताहूं ।१।

[1]इच्चेयाइं, [2]पंचमहव्वयाइं। [3]राईभोअण,वेरमण, छट्ठाइं॥ [4]अत्तहियऽट्ठयाए। उवसंपज्जित्ताणं,विहरामि१।

अप्रशस्त(खराब),फेर, जो, योगहै। मनःपरिणामहै,और, भयंकर। प्राणातिपात(हिंसा)के,विरमण(त्याग)में । यह,कहाहै,अतिक्रम(दोष)।२।

[2]अप्पसत्था,[1]य,जे,[3]जोगा।[5]परिणामा,[4]य,दारुणा॥ [7]पाणाइवायस्स, वेरमणे।[6]एस,[9]वुत्ते,[8]अइक्कमे२।

तीव्र(घणे),रागवाली,और, जो, भाषाहै। तीव्र, द्वेषवाली, वैसेही,तथा। मृषावाद(झूंट)के, विरमणमें। यह, कहाहै, अतिक्रम ।३।

[2]तिव्व, रागा, [1]य, [3]जा,भासा। [5]तिव्व,दोसा, [4]तहेव, [3]य ॥ [6]मुसावायस्स,वेरमणे। [9]एस, [10]वुत्ते, [8]अइक्कमे ।३।

अवग्रह[1]कुं,फेर,नहीं याच(मांग)के। नहींदियेहुए, और,अवग्रहमें(रहना)। अदत्तादान(चोरि)के,विरमणमें। यह, कहाहै, अतिक्रम ।४।

[2]उग्गहं, [3]च, [4]अजाइत्ता। [5]अविदिन्ने, [6]य, [7]उग्गहे॥ [8]अदिन्नादाणस्स,वेरमणे। [9]एस, [10]वुत्ते, [11]अइक्कमे।४।

[2]शब्द, [3]रूप, [4]रस। [5]गंध, [6]स्पर्शोंकी,प्रविचारणा[7]करनी। मैथुनके, विरमणमें। यह, कहाहै, अतिक्रम ।५। इच्छा[8], मूर्च्छा[9],

[1]सद्दा,रूवा,रसा। गंधा,फासाणं,पवियारणे॥ [3]मेहुणस्स,वेरमणे। एस, वुत्ते, अइक्कमे।५। [1]इच्छा, [3]मुच्छा,

और,गृद्धि[10],तथा। कांक्षा[11]रूप,लोभ,और, भयानक। परिग्रहके, विरमणमें। यह, कहाहै, अतिक्रम ।६। अतिमात्रासे[12],

[2]य, [3]गेही, [4]य। [5]कंखा, [6]लोभे, [7]य, [8]दारुणे॥ [11]परिग्गहस्स,वेरमणे। [10]एस, [13]वुत्ते, [12]अइक्कमे॥६॥ [1]अइमत्ते,

और,आहार(करना)। सूर्य क्षेत्रके[13], शंकितहोतेहुए। रात्रिभोजनके, विरमणमें। यह, कहाहै, अतिक्रम।७। दर्शन, ज्ञान,

य, [3]आहारे। [2]सूर खित्तम्मि, संकिए। [5]राईभोअणस्स,वेरमणे। [4]एस, [7]वुत्ते, [6]अइक्कमे॥७॥ [1]दंसण, नाण,

---

१ उपाश्रय। २ बीणा आदि वाजित्र वगेरहके। ३ स्त्री आदिके। ४ तीखे-कडुए आदि। ५ फूल आदिकी। ६ उष्ण-शीतादि।७ रागपूर्वक सेवना। ८ नहीं मिली किसी वस्तुकी अभिलाषा। ९ नष्टहुइ या गमी(खोइ)हुइ वस्तुका शोच। १० मिलीहुइ मौजूद वस्तुमें ममत्वभाव। ११ नहीं मिले विविध पदार्थोंकी वांछा। १२ खुद्रकी भूंखके प्रमाणसे अधिक। १३ सूर्यके उदय-अस्त प्रमाण आकाश क्षेत्रमें सूर्यका उदय वा अस्त हुआ या नहीं?, इसतरहकी शंका रखतेहुए।

चारित्रकुं। नहीं विराधके, रहाहुआ, श्रमण धर्ममें। पहले, (महा)व्रतकुं,बराबर रखता[1]हूं। विरत होताहूं[2], प्राणातिपात(हिंसा)से।८।

चरित्ते। अविराहित्ता.[3]ठिओ,[2]समणधम्मे॥[4]पढमं, वय, मऽणुरक्खे।[6]विरयामो,[5]पाणाइवायाओ॥८॥ दंसण नाण चरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे। बीयं (दूसरे) वयमऽणुरक्खे, विरयामो मुसा- वायाओ (मृषावादसे)॥९॥ दंसण नाण चरित्ते,अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे। तइयं (तीसरे)वयमऽणु- रक्खे,विरयामो अदिन्नादाणाओ(अदत्तादानसे)।१०।दंसण नाण चरित्ते,अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे। चउत्थं (चोथे) वयमणुरक्खे.विरयामो मेहुणाओ(मैथुनसे)।११।दंसण नाण चरित्ते,अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे। पंचमं (पांचमे) वयमणुरक्खे, विरयामो परिग्गहाओ (परिग्रहसे)।१२।दंसण नाण चरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे। छट्ठं (छट्ठे)वयमणुरक्खे, विरयामो राईभोअणाओ (रात्रिभोजनसे)।१३। [1]आलय (मकान[3])विहार[×]समिओ(समिति सहित), जुत्तो[*]गुत्तो[÷] [3]ठिओ[2]समणधम्मे। [4]पढमं वयमणुरक्खे, [6]विरयामो [5]पाणाइवायाओ।१४। आलय विहार समिओ,जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे। बीयं

१ पालता। २ निवर्तताहूं। ३ आधाकर्मादि दोष तथा स्त्री आदिके संसर्ग रहित उपाश्रय सेवताहूआ। × मासकल्पादि क्रमसे विहार करताहुआ। *(मुनिके गुण)युक्त। ÷ (तीनों गुप्तियोंसे)गुप्त–रक्षित।

वयमणुरक्खे, विरयामो मुसावायाओ ।१५। आलय विहार समिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समण-धम्मे। तइयं वयमणुरक्खे, विरयामो अदिन्नादाणाओ।१६। आलय विहार समिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे। चउत्थं वयमणुरक्खे, विरयामो मेहुणाओ ।१७। आलय विहार समिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे। पंचमं वयमणुरक्खे, विरयामो परिग्गहाओ ।१८। आलय विहार समिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे। छट्ठं वयमणुरक्खे, विरयामो राईभोअणाओ ।१९। [1]आलय विहार समिओ, जुत्तो गुत्तो [4]ठिओ [3]समणधम्मे। [2]तिविहेण (त्रिविध करके) अप्पमत्तो (अप्रमत्त हुआ), [5]रक्खामि (रख(पाल)ताहूं) [6]महव्वए (महाव्रतोंकुं) [7]पंच (पांचों) ।२०। [2]सावज्जजोग (सावद्य योगकुं[1]) । मे[1]गं (एक), [4]मिच्छत्तं (मिथ्यात्वकुं[2]) [3]एग (एक) मे[5]व (ऐसेही-एक) अन्नाणं (अज्ञानकुं)। परिवज्जंतो(सबतरह वरजता हुआ) गुत्तो (गुप्त हुआ) [8]रक्खामि [9]महव्वए [6]पंच।२१। [2]अणवज्जजोग (अनवद्य-पापरहित-योगकुं) मे[1]गं, [4]सम्मत्तं (सम्यक्त्वकुं) [5]एगमेव [7]नाणं (ज्ञानकुं) [6]तु (निश्चय) । [8]नवसंपन्नो(पामा हुआ)जुत्तो(युक्त हुआ). [11]रक्खामि [10]महव्वए[9]पंच।२२। [1]दो चेव

१ पापसहित मन-वचन-कायाके व्यापार। २ शुद्धदेव-गुरु-धर्मके उपर मनके विपरीत परिणाम।

(दोही) राग दोसे (राग-द्वेषकुं), [4]दुन्नि (दोनों) [2]अ(और) [5]झाणाइं (ध्यानोंकुं) [3]अट्ट-रुद्दाइं (आर्त-रौद्र)। [6]परिवज्जंतो गुत्तो, [8]रक्खामि [6]महव्वए [7]पंच । २३। [1]दुविहं(दो प्रकारके[1]) चरित्त धम्मं(चारित्र धर्मकुं), [4]दुन्नि [2]अ [5]झाणाइं [3]धम्म-सुक्काइं (धर्म-शुक्ल)। [6]उवसंपन्नो जुत्तो, [8]रक्खामि [6]महव्वए [7]पंच । २४। किण्हा (कृष्ण) नीला (नील) काउ (कापोत ये), तिन्नि (तीनों) अ (फेर) लेसाओ (लेश्यायें) अप्पसत्थाओ [अप्रशस्त-खराब]। परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच । २५। तेउ [तेजो] पम्हा [पद्मा] सुक्का [शुक्ला ये], तिन्नि अ लेसाओ सुप्पसत्थाओ [सुप्रशस्त-अच्छी]। उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच । २६। मणसा [मनसे] मण [मनके] सच्च [सत्य-संयमकुं] विऊ (जाननेवाला मैं), वाया (वचनके) सच्चेण (संयमसे) करण (कायाके) सच्चेण। तिविहेणवि (तीनोंही प्रकारसे) सच्चविऊ, रक्खामि महव्वए पंच । २७। चत्तारि (चार) य (फेर) दुह सिज्जा (दुःखशय्या[2]), चउरो (चार) सन्ना (संज्ञा[3]) तहा (तथा) कसाया (कषाय क्रोधादि) य। परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच । २८। चत्तारि य सुहसिज्जा (सुखशय्या[4]), चउव्विहं (चार प्रकारके) संवरं (संवरकुं[5]) समाहिं [समाधिकुं[6]]

१ देशविरति सर्वविरतिरूप । २ जिनधर्ममें अश्रद्धा कामभोगकी वांछा परके लाभकी इच्छा स्नानकी अभिलाषा । ३ आहार भय मैथुन परिग्रह । ४ जिनधर्ममें श्रद्धा विषय निवृत्ति पोतेके लाभमें संतोष स्नानकी अनिच्छा । ५ मन वचन काया तथा उपकरणका संवर नाम कर्मबंधनके मार्गको रोकना । ६ ज्ञान दर्शन चारित्र तप, या विनय श्रुत तप आचार ।

च। नवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ।२९। पंचेव (पांचोंही) य कामगुणे [शब्दादि कामगुणोंकुं], पंचेव य अण्हवे [हिंसादि ५ आश्रवोंकुं] महादोसे (महादोषवाले) । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ।३०। पंचिंदिय [पांचों इंद्रियोंको] संवरणं (वश रखनेकुं), तहेव (वैसेही) पंचविहमेव [पांचोंही प्रकारके] सज्झायं [१स्वाध्यायकुं]। नवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच।३१। छज्जीवनिकाय (पृथिव्यादि छजीव समुदायके) वहं [वध–नाशकुं], छप्पि (छहोंही) य भासाओ (२भाषाओंकुं) अप्पसत्थाओ [अप्रशस्त खराब] । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच।३२। छव्विह (छ प्रकारके) मऽब्भिंतरयं (अभ्यंतर), बज्झंपि (बाह्यभी) य छव्विहं तवोकम्मं (तपःकर्म(तपस्या)कुं) । नवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ।३३। सत्त (इह लोकादि-सात) भयट्ठाणाइं (भयके स्थानोंकुं), सत्तविहं चेव (सात प्रकारकेही) नाणविभंगं (विभंग ज्ञानकुं३)। परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ।३४। पिंडेसण (आहारकी एषणा४) पाणेसण (पाणीकी एषणा), नग्गहं (अवग्रह५) सत्तिकया (सप्तैकक६) महऽज्झयणा (७मोटे अध्ययन) । नवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ।३५। अट्ठ (आठ) भयट्ठाणाइं

१ वाचना–पृच्छनादि। २ झूं–हीलित–खिंसितादि। ३ मिथ्यात्व सहित अवधिज्ञान। ४ असंसृष्ट–संसृष्टादि सातभेदसे आहार तथा पाणी लेनेमें शुद्धताकी तलाश करना। ५ उपाश्रय याचनेमें 'यथाचिंतिता'दि सात अभिग्रह। ६ आचारांग दूसरे श्रुतस्कंधके 'सत्तसत्तिका' नामके सात अध्ययन। ७ सूयगडांग दूसरे श्रुतस्कंधके सात।

([1]मदके स्थानोंकुं)। अट्ठ य कम्माइं([2]कर्मोंकु)तेसिं(उनके)बंधं(बंधकुं)च। परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ।३६। अट्ठ य पवयण माया (प्रवचन माताकुं[3]),दिट्ठा (देखीहुइ) अट्ठविह (आठ प्रकारके) निट्ठिय (नष्टहुए) [?]ट्ठेहिं(अर्थ कर्मरूप वस्तुवाले तीर्थंकरोंने)। नवसंपन्नो जुत्तो,रक्खामि महव्वए पंच ।३७। नव(नव)पाव [पापके] नियाणाइं [नियाणोंकुं[4]],संसारत्था[संसारमें रहे]य नवविहा [नव प्रकारके[5]] जीवा (जीवोंकुं) । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ।३८। नव[नववाड युक्त]बंभचेर[ब्रह्मचर्यसे]गुत्तो(रक्षित हुआ),दुनवविहं(दो नव १८प्रकारके) बंभचेर (ब्रह्मचर्यकुं[6]) परिसुद्धं (सबतरह शुद्ध)। नवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ।३९। नवघायं ([7]उपघातकुं) च दसविहं (दश प्रकारके), असंवरं (आश्रवकुं[8]) तहय(वैसेही)संकिलेसं(संक्लेश असमाधिकुं[9])च । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ।४०। सच्च (सत्य[10])समाहिठाणे (समाधि स्थानोंकुं[11]),दस (दश) चेव

१ जाति–लाभादि। २ ज्ञानावरणीयादि। ३ पांच समिति तीन गुप्ति। ४ इस भवमें आराधे चारित्रादिसे भवांतरमें राजा–शेठ आदिपदको प्राप्त होनेका निश्चय ५ पृथिव्यादि पांच स्थावर तथा बेइंद्रियादि चार त्रस। ६ औदारिक तथा वैक्रिय मैथुनको मन–वचन–कायासे करना-कराना-अनुमोदना नहीं। ७ उद्गम–उत्पादना और एषणाके दोष लगाना, एवं वस्त्रादि उपकरणोंकी सफाइ रखना, इत्यादि दश आचरण संयमकुं घात करनेवाले। ८ पांचों इंद्रियोंको तथा मन वचन–कायाको निजनिज विषयोंसे न रोकना, प्रमाणसे अधिक या अकल्प्य वस्त्रादि लेना, सुंइ आदि शस्त्र रखना। ९ वस्त्रादि उपकरण–उपाश्रय–आहारादिके निमित्तसे असमाधि करना। १० देश सत्यादि। ११ स्त्री-पशु–नपुंसकादिके संसर्ग रहित उपाश्रय लेना आदि।

(निश्चय) दसाओ [[१]दशा-श्रुत स्कंधकुं] समणधम्मं (क्षमादि श्रमण-मुनि-धर्मकुं) च । जवसंपन्नो जुत्तो, रख्खामि महव्वए पंच ।४१। आसायणं (आशातनाओंकुं) च सव्वं,तिगुणं(तीनगुणि)इक्कारसं (इग्यारे-३३) विवज्जंतो (विशेष वरजता हुआ)। [×]जवसंपन्नो जुत्तो,रख्खामि महव्वए पंच ।४२। एवं(इसतरह) तिदंड(तीन दंडसे) विरओ (विरत(रुका)हुआ),तिगरण (तीन करणसे) सुद्धो (शुद्ध हुआ)तिसल्ल (तीन शल्य पीडासे)निसल्लो(निःशल्य-पीडारहित हुआ) । तिविहेण (त्रिविध करके) पडिक्कंतो (पडिक्कमा-पीछाहटा हुआ), रख्खामि महव्वए पंच ।४३।

इस प्रकार यह,महाव्रतोंका उच्चारण,स्थिरताका हेतुहै, [२]शल्य निकालनेवालाहै, धीरजताका बलदायकहै, व्यवसाय[२]है, शिव साधनका हेतुहै,
[१]इच्चेइयं,महव्वयउच्चारणं, थिरत्तं, सल्लुद्धरणं, धिइबलयं, ववसाओ, साहणऽट्ठो,
पाप निवारनेवालाहै, व्रत स्वीकारका दृढ हेतुहै, भावकुं शोधनेवालाहै,[३]पताका(ध्वजा)कुं, लेनेवालाहै,[४]निकालनेवालाहै,आराधना है,[५]गुणोंकी,
पावनिवारणं, निकायणा, भावविसोही, पडागा, ऽऽहरणं,निज्जुहणा,[३]ऽऽराहणा,[५]गुणाणं,
संवर[६]का,योग (संबंध) है,प्रशस्त(शुभ),ध्यानकी उपयुक्तता[७]है, युक्तताहै, और, ज्ञानसे,सत्य[८]पदार्थ है, उत्तम पदार्थ है, यह, निश्चय,
[४]संवर, जोगो, पसत्थ, ज्झाणोवउत्तया, [६]जुत्तया, [७]य, नाणे, [७]परमऽट्ठो, उत्तमऽट्ठो, [१]एस, [८]खलु,

× अनाशातनाकुं । २ दुष्कर कामके परिणामवाला । ३ चारित्र आराधनारूप । ४ कर्मशत्रुको । ५ चारित्रके । ६ आतेहुए नवीन कर्मोंकी रुकावट । ७ सहितपणा । ८ बनावटी नहीं ।

१ दश अध्ययनवाले ।

तीर्थंकरोंने, रति (काम),राग, द्वेषकुं, मथनेवाले, कहा है[१], प्रवचन(सिद्धांत)का, सार, छ जीव निकायके संयमकुं, उपदेश(कह)के,

[१२]तित्थंकरेहिं, [११]रइ,राग,दोस,महणेहिं, [१३]देसिओ, [१०]पवयणस्स,सारो, [१४]छज्जीवनिकायसंजमं,उवएसिय,

तीन लोकसे,सत्कारे हुए,(मोक्ष)स्थानकुं,अच्छीतरह प्राप्त हुए हैं। नमस्कार हो,आपको, हे सिद्ध ![२], हे बुद्ध ![३], हे मुक्त ![४], हे नीरज[५]!

तेल्लोक, सक्कयं, ठाणं, अब्भुवगया। [१७]नमोऽत्थु, [१६]ते, [१५]सिद्ध !, बुद्ध !, मुत्त !, नीरय !,

हे निस्संग ![६],हे मानको दलनेवाले,हे गुणरूप रत्नके सागर !,हे अनंत(ज्ञानी) !,हेअप्रमेय ![७], नमस्कार हो, आप, महान[८],महा(मोटे)वीर,

निस्संग !, माणमूरण !, गुणरयणसायर !, मणंत !, मप्पमेय !, [१९]नमोऽत्थु, [१८]ते, महइ, महावीर,

वर्द्धमान, स्वामिको। नमस्कार हो, आपको,अर्हन(पूज्य)होनेसे। नमस्कार हो, आपको, भगवानहो इसवास्ते। यह, निश्चय,

वद्धमाण,सामिस्स। [२२]नमोऽत्थु, [२१]ते [२०]अरहओ। [२५]नमोऽत्थु, [२४]ते, [२३]भगवओ,त्तिकट्टु। [२६]एसा, खलु,

महाव्रतोंकी, उच्चारणा, करली, (अब)इच्छतेहैं, सूत्रकी, कीर्तना, करना!

महव्वय,उच्चारणा, कया, इच्छामो, सुत्त, कित्तणं, काउं।

---

१ और वे तीर्थंकर। २ कर्मोंकु भस्म करके सिद्धहुए। ३ केवलज्ञानसे सब पदार्थ जाननेवाले। ४ कर्मपिंजरसे छूटेहुए। ५ कर्मबंधनरूप रजरहित। ६ स्त्री-पुत्र-धनादिके संगरहित। ७ छद्मस्थोंके ज्ञानसे जाननेमें नहीं आनेवाले। ८ मोटे(मोक्ष)में करीहै मति जिन्होंने ऐसे।

नमस्कार हो, उन, क्षमाश्रमणों(मुनिओं)कुं, जिन्होंने, इस-यह, वांचाहै[१], छ प्रकारके आवश्यककुं, अतिशयवाले। वह[२] इसतरहहै-सामायिक[३] १,

[६]नमो, [७]तेसिं, खमासमणाणं, [१]जेहिं, [२]इमं, [५]वाइयं, [४]छव्विहमावस्सयं, [२]भगवंतं। [१]तंजहा–सामाइयं१,

चतुर्विंशतिस्तव[४] २, वंदनक(वांदणा)[३], प्रतिक्रमण[५] ४, कायोत्सर्ग ५, प्रत्याख्यान ६। सब ही, इस, छ प्रकारके,

चउवीसत्थओ२, वंदणयं ३, पडिक्कमणं४, काउस्सग्गो५, पच्चक्खाणं६। सव्वेहिं पि, [१]एयम्मि, छव्विहे,

आवश्यकमें, ऐश्वर्यादियुक्त, (मूल) सूत्रसहित, अर्थसहित, [६]ग्रंथसहित, निर्युक्तिसहित, संग्रहणीसहित, जो, गुण, या, भाव[७], अरिहंत,

आवस्सए, [८]भगवंते, ससुत्ते, सअत्थे, सग्गंथे, सनिज्जुत्तिए, ससंगहणिए, [१०]जे, गुणा, वा, भावा वा, अरिहंतेहिं,

भगवंतोंने, [८]बतायेहैं, अथवा, प्ररूपे[९]हैं, चाहे, उन, भावोंकुं, सद्दहते हैं, प्रीतिसे स्वीकारते हैं, रोचते हैं, फरसते हैं, पालते हैं,

भगवंतेहिं, [१२]पन्नत्ता, वा, परूविया, [११]वा, [१३]ते, भावे, सद्दहामो, पत्तियामो, रोएमो, फासेमो, पालेमो,

वारंवार पालते हैं, उन, भावोंकुं, सद्दहते हुए, प्रीतीसे स्वीकारते हुए, रोचते हुए, फरसते हुए, पालते हुए, वारंवार पालतेहुए, अंदर,

अणुपालेमो, ते, भावे, सद्दहंतेहिं, पत्तियंतेहिं, रोयंतेहिं, फासंतेहिं, पालंतेहिं, अणुपालंतेहिं, [१५]अंतो.

---

१ मुझे पढायाहै, या रचा(बनाया)है। २ छप्रकारका आवश्यक। ३ पाप योगकात्याग। ४ चोवीसों तीर्थंकरोंकी स्तुतिरूप लोगस्स। ५ लगे दोषोंकी निंदाहै जिसमें, पगामसिज्जाए। ६ मूल सूत्र तथा अर्थ दोनुंरूप। ७ क्षायिकादि छ भाव, या जीवाजीवादि पदार्थ। ८ सामान्यपणे। ९ विशेषपणेसे कहे॥

पक्षके, जो,वांचाहो[१],पढाहो(स्वयं),परावर्त्ताहो[२],[३]पूछाहो, अर्थसंभालाहो, [४]शुद्ध पालाहो, वह, दुःख क्षयकेलिये, कर्म क्षयके-
[१४]पक्खस्स[×], [१६]जं,वाइयं,पढियं,परियट्टियं,पुच्छियं,अणुप्पेहियं,अणुपालियं,तं,दुक्खक्खयाए,कम्मक्ख-
लिये, मोक्षकेलिये, बोधिलाभकेलिये,संसारसे उतारनेकेलिये(होगा),इसवास्ते,अंगीकार करके, विहर(वर्त्त)ताहूं। अंदर, पक्षके,
याए,मोक्खयाए,बोहिलाभाए,संसारुत्तारणाए, त्ति कट्टु,उवसंपज्जित्ताणं,विहरामि। [१८]अंतो, [१७]पक्खस्स,
जो,नहीं वांचाहो, नहीं पढा हो, नहीं परावर्ता हो, नहीं पूछा हो, नहीं अर्थ विचाराहो, [५]नहीं शुद्ध पाला हो,होते हुए, बल[६]के, होते हुए,
[२५]जं,न वाइयं, न पढियं, न परियट्टियं,न पुच्छियं,नाऽणुप्पेहियं,नाऽणुपालियं, [२०]संते, [१९]बले, [२२]संते,
वीर्य[७]के, होते हुए, पुरुषाकार[८], पराक्रमके, उसको, आलोचते हैं, पडिक्कमते हैं, निंदते हैं, गर्हतेहैं, व्यतिवर्त्तनेहैं[९],विशेष-
[२१]वीरिए, [२४]संते, [२३]पुरिसकार, परक्कमे, [२६]तस्स,आलोएमो,पडिक्कमामो,निंदामो,गरिहामो,विउट्टेमो,विसो-
शोधते हैं,नहीं करनेपणेसे[१०],अभ्युत्थित(तयार)होते हैं,यथायोग्य[११], तपःकर्मरूप,प्रायश्चित्तकुं, स्वीकारते हैं, उसका, मिथ्याहो मेरे दुष्कृत।
हेमो, अकरणयाए, अब्भुट्ठेमो, अहारिहं, तवोकम्मं,पायच्छित्तं,पडिवज्जामो,तस्स,मिच्छामि दुक्कडं।

१ दूसरोंको पढायाहो। २ मूल सूत्रका पाठ कियाहो। ३ किसी बातका संदेह मिटानेकेलिये दूसरेको। ४ इस प्रकारसे। × चोमासीमें 'अंतो चोमासिअस्स' और संवच्छरीमें 'अंतो संवच्छरस्स' बोलना। ५ वांचने-पढनेआदि आचारको। ६ शरीरकी ताकात। ७ आत्मबल। ८ पुरुषपणेके अभिमानरूप। ९ नहीं वांचने आदिके कारण (आलस्यादि)को तोडतेहैं। १० इन(नहीं वाचनाआदि) दोषोंकुं अबसे नहीं करनेकी प्रतिज्ञासें। ११ छोटे या मोटे अपराधके लायक।

नमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइयं अंगबाहिरं [१अंगोंसे बाहरके] उक्कालियं [२उत्कालिक श्रुतकूं] भगवंतं. तंजहा-दसवेआलियं[दशवैकालिक]कप्पिआकप्पियं [कल्पिकाकल्पिक]चुल्लकप्पसुअं [क्षुल्ल-छोटा-कल्पश्रुत] महाकप्पसुअं [महा-मोटा-कल्पश्रुत] उववाइयं [औपपातिक७] रायप्पसेणियं (राजप्रश्नीय-रायपसेणी) जीवाभिगमो पन्नवणा (प्रज्ञापना) महापन्नवणा (महाप्रज्ञापना) नंदि [नंदिसूत्र] अणुओगदाराइं (अनुयोगद्वार) देविंदत्थओ (देवेंद्रस्तव) तंदुलवेयालियं(तंदुलवैचारिक) चंदाविज्झयं (चंद्रावेध्यक) पमायऽप्पमायं (प्रमादाप्रमाद) पोरिसिमंडलं (पौरुषीमंडल) मंडलप्पवेसो (मंडलप्रवेश) गणिविज्जा (गणिविद्या) विज्जाचरणविणिच्छओ (विद्याचरणविनिश्चय) झाणविभत्ती (ध्यानविभक्ति) मरणविभत्ती(मरणविभक्ति) आयविसोही(आत्मविशोधि) संलेहणासुअं (संलेखनाश्रुत) वीअरायसुअं (वीतरागश्रुत) विहारकप्पो (विहारकल्प) चरणविसोही (चरणविशोधि) आउरपच्चक्खाणं (आतुर-प्रत्याख्यान) महापच्चक्खाणं (महाप्रत्याख्यान) सव्वेहिं पि एयम्मि अंगबाहिरे उक्कालिए (उत्कालिकमें) भगवंते. ससुत्ते. सअत्थे. सग्गंथे. सनिज्जुत्तिए. ससंगहणिए. जे गुणा वा भावा वा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्ता

१ आचारांगादि बारे।

---

२ जिनके जोगमें कालग्रहण नही लिये जाते,तथा दिनरात्रिकी चार कालवेलाके शिवाय सभी टाइममें पढ सके उन। ७ ये औपपातिकादि बारसूत्र आचारांगादि बारके उपांगहै।

वा परूविया वा ते भावे सद्दहामो. पत्तियामो. रोएमो. फासेमो. पालेमो. अणुपालेमो. ते भावे सद्दहंतेहिं. पत्तियंतेहिं. रोअंतेहिं. फासंतेहिं. पालंतेहिं. अणुपालंतेहिं अंतो पख्खस्स जं वाइयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुप्पेहियं अणुपालियं. तं दुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु [1]उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । अंतो पक्खस्स, जं न वाइयं न पढियं न परियट्टियं न पुच्छियं नाऽणुप्पेहियं नाऽणुपालियं, संते बले संते वीरिए संते पुरिसकार परक्कमे, तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो, अकरणयाए अभ्भुट्ठेमो, अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

नमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइयं अंगबाहिरं कालियं (कालिक सिद्धांतकुं[2])। भगवंत, तंजहा-उत्तरज्झयणाइं (उत्तराध्ययन) दसाओ (दशाश्रुतस्कंध) कप्पो (बृहत्कल्प) ववहारो (व्यवहार) इसिभासियाइं (ऋषिभाषित) निसीहं (निशीथ) महानिसीहं (महानिशीथ) जंबुद्दीवपन्नत्ती (जंबूद्रीपप्रज्ञप्ति) सूरपन्नत्ती (सूर्यप्रज्ञप्ति)

१ उत्कालिक सिद्धांतोंमें कहे आचार-विचारको अंगीकार करके। २ जिनके योगोद्वहनमें कालग्रहण लियेजाते हैं, तथा जिनको पडनेकेलिये दिनरात्रिका पहला-चौथा पहोर नियतहै उनकुं।

चंदपन्नत्ती (चंद्रप्रज्ञप्ति) दीवसागरपन्नत्ती (द्वीपसागरप्रज्ञप्ति) खुडिड्या विमाणपविभत्ती [क्षुल्लिका विमान प्रविभक्ति] महल्लिया विमाण पविभत्ती (महति-महल्लिका-विमान प्रविभक्ति) अंगचूलियाए (अंगचूलिका) वग्गचूलियाए (वर्गचूलिका) विवाहचूलियाए (विवाह-व्याख्या-चूलिका) अरुणोववाए (अरुणोपपात) वरुणोववाए (वरुणोपपात) गरुलोववाए (गरुडोपपात) धरणोववाए (धरणोपपात) वेसमणोववाए (वैश्रमणोपपात) वेलंधरोववाए (वेलंधरोपपात) देविंदोववाए (देवेंद्रोपपात) उट्ठाणसुए (उत्थानश्रुत) समुट्ठाणसुए (समुत्थानश्रुत) नागपरिआवलिआणं (नागपरिज्ञावलिका) निरयावलियाणं (निरयावलिका) कप्पियाणं[1] (कल्पिका) कप्पवडिंसयाणं (कल्पावतंसक) पुप्फिआणं (पुष्पिका) पुप्फचूलियाणं (पुष्पचूलिका) [वण्हिआणं[2] (वृष्णिका)] वण्हिदसाणं (वृष्णिदशा) आसीविसभावणाणं (आशीविषभावना) दिट्ठीविसभावणाणं (दृष्टिविषभावना) चारण समण भावणाणं (चारण श्रमण भावना) महासुमिण भावणाणं (महास्वप्न भावना) तेअग्गि निसग्गाणं (तेजोऽग्नि निसर्ग) सव्वेहिं पि एयम्मि अंगबाहिरे कालिए (कालिकमें) भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सनिज्जुत्तिए ससंगहणिए जे गुणा वा भावा वा अरिहंतेहिं

१ कल्पिकादि वृष्णिदशातक पांचोंहीसूत्र 'निरयावलिका'के वर्गहै। २ टीका अवचूरिमें एवं भाषांतरमें यह पद नहींहै, परंतु मूलकी पुस्तकोंमें होनेसे इसको ब्राकीट ( )में रखाहै।

भगवंतेहिं पन्नत्ता वा परूविया वा ते भावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपा-लेमो ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोअंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो पक्खस्स जं वाइयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुप्पेहियं अणुपालियं, तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्ख-याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । अंतो पक्खस्स जं न वाइयं न पढियं न परियट्टियं न पुच्छियं नाऽणुप्पेहियं नाऽणुपालियं, संते बले संते वीरिए संते पुरिसकार परक्कमे, तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो, अहारिहं तवो कम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

नमो तेसिं खमासमणाणं जेहिं इमं वाइयं दुवालसंगं(द्वादशांग-बारहअंग-श्रुत)गणिपिडगं (गणिपिटकरूप[१]) भगवंतं, तंजहा—आयारो (आचारांग) सूयगडो (सूत्रकृतांग) ठाणं(स्थानांग)समवाओ(समवायांग)विवाहपन्नत्ती (व्यख्याप्रज्ञप्ति-भगवती) नाया-धम्मकहाओ (ज्ञाता-धर्मकथांग) उवासगदसाओ (उपासकदशांग) अंतगडदसाओ (अंतकृद्दशांग) अणुत्तरोववाइय दसाओ(अनुत्तरोपपातिक दशांग)पण्हावागरणं(प्रश्नव्याकरणांग)विवागसुयं(विपाकश्रुत)

१ आचार्यके गुणरूप रत्नोंकी पेटीसमान।

दिट्ठिवाओ (दृष्टिवाद) सव्वेहिं पि एयम्मि दुवालसंगे (द्वादशांगरूप) गणिपिडगे (गणिपिटकमें) भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सनिज्जुत्तिए ससंगहणिए जे गुणा वा भावा वा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्ता वा परूविया वा ते भावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो, ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोअंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो पक्खस्स जं वाइयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुप्पेहियं अणुपालियं, तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसा-रुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि। अंतो पक्खस्स जं न वाइयं न पढियं न परिय-ट्टियं न पुच्छियं नाऽणुप्पेहियं नाऽणुपालियं, संते बले संते वीरिए संते पुरिसकार परक्कमे, तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो, अकरणयाए अब्भुट्ठेमो, अहारिहं तवो कम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

१ जो क्षमाश्रमण इस द्वादशांगमें कहे आचारको।
२ गुरु आदिके पास योगोद्वहनादि विधिपूर्वक ग्रहण करतेहैं।

नमस्कार हो,उन, क्षमाश्रमणोंको, जिन्होंने, यह,वांचाहै[तथा],द्वादशांगश्रुत, गणिपिटकरूप,ऐश्वर्यादियुक्त,१अच्छीतरह,कायासे,फरसतेहैं२,
८नमो, ७तेसिं,खमासमणाणं, १जेहिं,इमं, ५वाइयं, ४दुवालसंगं, ३गणिपिडगं, २भगवंतं, ६सम्मं,काएणं,फासंति,

पालतेहैं[1],पूरतेहैं[2],तीरतेहैं[3], कीर्ततेहैं[4],अच्छीतरह,आज्ञासे, आराधतेहैं, मैं, और, नहीं, आराधताहूं, उसका मिथ्याहो मेरे, दुष्कृत।
पालंति,पूरंति,तीरंति,किट्टंति, सम्मं,आणाए,आराहंति, [10]अहं,[9]च,[11]न,आराहेमि,तस्स मिच्छामि,दुक्कडं ॥

श्रुतदेवता, भगवती(पूज्या)। ज्ञानावरणीय, कर्मके,समुदायकुं। उनके, खपाओ, निरंतर। जिन्होंकी,श्रुत सागरमें,भक्तिहै ।१।
[5]सुअदेवया,[4]भगवई। [3]नाणावरणीय,कम्म,संघायं ॥ [2]तेसिं,[7]खवेउ,[6]सययं। [1]जेसिं,सुअसायरे,भत्ती।१।

इच्छताहूं, हेक्षमाश्रमण(गुरो) !, प्रियहै,और,मेरेकुं,जो,आपका,हर्षितहुए,संतुष्टहुए,अल्प(नहीं)रोगवाले, नहीं भग्नहुए,(संयम)योगवाले,
[2]इच्छामि,[1]खमासमणो !,[4]पियं,[3]च, मे,[5]जं,[9]भे,[6]हट्ठाणं,तुट्ठाणं, अप्पायंकाणं, अभग्ग, जोगाणं,
अच्छे शीलवाले,अच्छे व्रतवाले, आचार्य उपाध्याय सहित, ज्ञानसे, दर्शनसे, चारित्रसे, तपस्यासे, आत्माकुं, भावते हुए,
सुसीलाणं, सुव्वयाणं,सायरियउवज्झायाणं,नाणेणं,दंसणेणं, चरित्तेणं, तवसा, अप्पाणं, भावेमाणाणं,
बहुत शुभ(सुख)से,हे भगवन् !,दिवस(दिन),पौषध(पर्व)रूप, पक्ष, [चोमासा, संवत्सर(वर्ष)], बीताहै, अन्य(पक्षादि),और,आपके,
[8]बहुसुभेण, [7]भे! [11]दिवसो,[10]पोसहो,[12]पक्खो,(चउम्मासो,संवच्छरो),वइक्कंतो, [14]अन्नो,[13]य, भे,
कल्याणसे, पर्युपस्थित(प्राप्त)हुआहै,(वास्ते)शिरसे, मनसे, मस्तक(नमा)करके, वांदताहूं ।२। गुरु कहे–तुमारे,साथ।
[15]कल्लाणेणं, पज्जुवट्ठिओ, सिरसा, मणसा, मत्थएण, वंदामि।२। तुब्भेहिं, समं। ।१६८॥

१ पढे बाद वारंवार पाठ करने आदिसे रक्षण करतेहैं। २ पढतेहुए अधूरा नहीं छोडतेहैं। ३ नहीं भूलके जन्मभर पार लगातेहैं। ४ वांचनादि पांचों प्रकारके स्वाध्यायसे कीर्तन करतेहैं।

इच्छताहूं, हेक्षमाश्रमण(गुरो) !,(विहारसे)पहले,चैत्यों[जिनबिंबो]को,वंदनकरके,नमस्कारकरके,आपके,चरणोंकेमूलमें, विचरते हुए(मैंने),जो,
[2]इच्छामि,[1]खमासमणो !, [3]पुव्विं, चेइयाइं, वंदित्ता,नमंसित्ता,तुब्भण्हं,पायमूले,विहरमाणेणं,जे,
कोइ, बहुतदिनोंके दीक्षावाले, साधु, देखे(उनमेंसे),[1]स्थिर रहे हुए,अथवा,मासकल्पादि वसे हुए,या,एक गामसे दूसरे गाम, विहार करते हुए,
केइ, बहुदेवसिया, साहुणो, दिट्ठा, समाणा, वा, वसमाणा, वा, गामाणुगामं, दुइज्जमाणा वा,
दीक्षामें मोटे(आचार्य, आपका)कुशल पूछतेहैं,दीक्षामें छोटे(आचार्य, आपको)वांदतेहैं, साधु, वांदतेहैं, साध्वीयें, वांदतीहैं, श्रावक,
रायणिया, संपुच्छंति, ओमरायणिया, वंदंति, अज्जया,वंदंति,अज्जियाओ,वंदंति, सावया,
वांदतेहैं, श्राविकायें, वांदतीहैं मैं भी, शल्यरहितहूं, कषायरहितहूं, इसवास्ते, शिरसे, मन(भाव)से,मस्तक(नमा)करके,वांदताहूं ।
वंदंति,सावियाओ,वंदंति, अहंपि,निस्सल्लो,निक्कसाओ, त्तिकट्टु,सिरसा, मणसा, मत्थएण, वंदामि ।
मैं भी(आपको), वंदाताहूं[2], चैत्य(जिनबिंब) । गुरुकहे - मस्तककरके,वांदताहूं,मैं भी,उन(चैत्यादि)कुं ।
×अहमवि, वंदावेमि,चेइयाइं ।२। मत्थएण,वंदामि,अहंपि, तेसिं ।

४ मेरे काममें आतीहुइ सब चीजें आपकीही है. वास्ते । ५ कल्पे वैसा ।

इच्छताहूं, हे क्षमाश्रमण(गुरो) !,[3]उपस्थित (तयार)हुआहूं कि-[4]आपके,संबधी, यथाकल्प्य[5],चाहे, वस्त्र, अथवा,पतद्ग्रह(पात्रा),अथवा,
[2]इच्छामि,[1]खमासमणो !, [3]उवट्ठिओहं-तुब्भण्हं, संतियं,अहाकप्पं,वा,वत्थं, वा, पडिग्गहं, वा,

१ अशक्तिआदिके कारण एक गाममें । २ मैंने जिन चैत्योंको आपकी तरफसे वांदे हैं.उनकुं आपभी वांदो । × किसी पुस्तकमें इसको गुरुका वचन लिखाहै । ३ मैं आपके आगे निवेदन करनेको ।

कंवल,अथवा,पादप्रोंछन(ओघारिया),अथवा,रजोहरण(ओघा),या, अक्षर, अथवा,पद,अथवा,गाथा,या, श्लोक, अथवा,श्लोकका आधा(भाग),
कंबलं,वा, पायपुंछणं वा, रयहरणं, वा,अक्खरं,वा,पयं,वा,गाहं,वा,सिलोगं,वा, सिलोगऽद्धं,

या, अर्थ,अथवा, हेतु, या, प्रश्न, अथवा, उत्तर(ये सब), आपने, प्रीतिसे,(मुझे)दिये, मैंने, अविनयसे, ग्रहण कियेहो, उसका,
वा,अट्ठं, वा,हेउं,वा,पसिणं,वा,वागरणं वा,तुभ्भेहिं,चियत्तेण, दिन्नं,मए, अविणएण,पडिच्छियं, तस्स,

मिथ्याहो मेरे, दुष्कृत। गुरु कहे—आचार्य संबधीहै[1],ऐसा ।
मिच्छामि,दुक्कडं ।३। आयरियसंतियं,ति ।

१ ये सब चीजें गुरु महाराजकीहैं,मेरा कुच्छ नही है,ऐसा कहना अहंकारका त्याग और गुरुभक्तिसेहै ।
२ आवते कालमें वेयावच्च आदि करना। ३ ज्ञानाचारादि पांच। ४ आपने स्वयं मुझे ।

इच्छताहूं, हे क्षमाश्रमण(गुरो)!, मैं, अपूर्व[2],(पहले)कियेहुए, और,मैंने,कृतिकर्म(वेयावच्चआदि)में,[3]आचारकीहीनता होनेपर,विनयहिनता
[2]इच्छामि,[1]खमासमणो!,अह,मपुव्वाइं, [4]कयाइं,[3]च,मे, [5]किइकम्माइं, आयारमंतरे, विणय-

होनेपर,[4]शिक्षादीहै,शिक्षादिलाईहै,(शिष्यपणे)संग्रहाहै उपगृहीतकिया[5],हितमें प्रवर्ताया,अहितसे निवारा,(संयममें)प्रेरा,वारंवार प्रेरा,प्रियहै(वास्ते),
मंतरे,सेहिओ,सेहाविओ, संगहिओ,उवग्गहिओ,सारिओ, वारिओ, चोइओ,पडिचोइओ,[6]चियत्ता,

मुझे,वारंवारकी प्रेरणा,[6]उपस्थितहुआ, मैं, आपके, तपस्तेजकी, लक्ष्मीसे, इस, [7]चार अंतवाले, संसाररूपी, वनसे, संहरके[8],
[7]मे,[6]पडिचोयणा,[9]उवट्ठिओ,ऽहं,तुभ्भण्हं,तवतेय,सिरीए,[11]इमाओ,चाउरंत, संसार,कंताराओ,[10]साहट्टु,

५ वस्त्र—पात्र तथा ज्ञानादि देके आश्रय दिया। ६ जिसमें आपने प्रेरणा करीः उस आचारादिकुं प्राप्त करनेके लिये। ७ नरकादि गतियोंके भेदसे। ८ कषायादिकुं दूर करके

निस्तरूं(पार होऊं)गा,ऐसाकरके, शिरसे, मनसे, मस्तकनमाके, वांदताहूं। गुरु कहे–निस्तारनेवाले[1],(भवसे)पारगामी,(तुम)हो।
[12]नित्थरिस्सामि,त्तिकट्टु,सिरसा,मणसा,मत्थएण,वंदामि ।४। नित्थारग, पारगा, होह ।

धर्म, मंगलहै,उत्कृष्ट[उत्तम]। जीवदया, संजम, तप(ये)। देवता, पण,उसकुं,नमस्कार करेहै। जिसका, धर्ममें है, सदा,
[2]धम्मो, [4]मंगल, [3]मुक्किट्ठं। [1]अहिंसा,संजमो,तवो॥ [10]देवा,वि, [9]तं, [11]नमंसंति। [5]जस्स, [8]धम्मे, [7]सया,
मन ।१। जैसे, झाडके, फूलोंमें। भमरा,थोडा थोडा पीताहै, रसकुं। नहीं,फेर, फूलकुं,किलामणा(पीडा)करेहै। वह, और,
[6]मणो ॥१॥ [1]जहा, [3]दुमस्स,पुप्फेसु। [2]भमरो, [5]आविअइ, [4]रसं॥ [7]न,[6]य, पुप्फं, [8]किलामेइ । [10]सो, [9]य,
तृप्त करेहै, आत्माकुं ।२। इसप्रकार,ये, तपस्वी, निर्लोभी। जो, लोकमें, हैं (वे), साधु साध्वी। भमरेकीतरह, फूलोंमें। दीयेहुए,
[12]पीणेइ, [11]अप्पयं॥२॥ [1]एमे,ए, [3]समणा, [2]मुत्ता। जे, लोए, [5]संति, [4]साहुणो ॥ [7]विहंगमाव, [6]पुप्फेसु। [8]दाण,
आहारकी,तलाशीमें,रक्त(राजी)रहेहै।३। [2]हम,फेर,आहारआदि, लेवेंगे। नहीं,और,कोइ जीव,हणाय(वैसे)। [3]जैसाकिया उसमें,विचरे(वर्ते)हैं।
भत्त, सणे, रया ॥३॥ [1]वयं, [3]च, [2]वित्तिं,लब्भामो । [5]न, [4]य, कोइ, [6]उवहम्मइ॥ अहागडेसु, [7]रीयंते।
फूलोंमें, भमरे, जैसे ।४। भमरेके, समान, [4]मुनि। जो,होतेहैं (वे), निश्रा[5]रहित। जुदे जुदे[6], आहारमें, रक्त, दांत[×]।
[2]पुप्फेसु,भमरा, [1]जहा ॥४॥ महुगार,समा,बुद्धा। जे, भवंति,अणिस्सिया॥ नाणा, पिंड, रया,दंता ।

१ जीवोंको भवसेतारनेवाले, या अपनी प्रतिज्ञा निभानेवाले ।२ शिष्य प्रतिज्ञा करते हैं। ३गृहस्थने अपने वास्ते ।४ तत्वके जाण। ५ कुलादिके प्रतिबंध। ६ घरोंके निर्दोषी ।× लोलुपतारहित।

करतेहैं(और),सुबुद्धिवाले। पंडित,अत्यंत चतुर(पापसेडरनेवाले)। निवर्त(हट)तेहैं,कामभोगोंसे। जैसे,वह,पुरुषों में उत्तम[1]।१.१। ऐसा,बोलताहूं।
[4]करंति, [3]संबुद्धा! पंडिया,पवियक्खणा ॥[6]विणियट्टंति, [5]भोगेसु।[2]जहा,से,पुरिसुत्तमो ॥११॥ [7]त्ति, बेमि ॥

(१.७भेदे)संजममें,अच्छे थिर आत्मावाले। विशेषमुक्त[2],स्व-परके रक्षक। उनकुं,ये[3],आचरणे योग्य नहीं है। निर्ग्रंथ[4],महर्षि(साधु-साध्वी)योंकुं।१।
[1]संजमे, सुट्ठिअप्पाणं। विप्पमुक्काण,ताइणं ॥ तेसि, [3]मेय, मऽणाइण्णं।[2]निग्गंथाणं, महेसिणं ॥१॥

उद्देशिक[5],वेचाती लाया। नीमंत्रा (नोतरा)हुआ,सामे लाया, फेर। रात्रिभोजन, स्नान करना,फेर। सुगंधो[6],फूलमाला,और,वींजनाचलाना।२।
[1]उद्देसियं, [2]कीयगडं।[3]नियाग, [4]मऽभिहडाणि, [5]य॥[6]राइभत्ते, [7]सिणाणे, [8]य।[9]गंध, [10]मल्ले, [11]य, [11]वीयणे॥२॥

[7]भोजनसंग्रह,गृहस्थीका वासण,और। राजपिंड आहारादि,दानशालासेलेना। तेलआदि लगाना,अंगुलीसेदांतधोवणे,और। गृहस्थकुंकुशलपूछना,
[1]संनिहि, [2]गिहिमत्ते, [3]य। [4]रायपिंडे, [5]किमिच्छए॥ [6]संबाहणं, [7]दंतपहोयणा, [8]य। [9]संपुच्छणं,

शरीरमुख काचमें देखना, फेर।३। जुगार रमणा[8], फेर,पाने आदिरमणा। छत्रकुं,फेर,धारणकरना,अनर्थकेलियेहैं। वैदगीकरना,पगरखे(मोजे),
[11]देह पलोयणा, [10]य॥३॥[1]अट्ठावए, [2]य, [3]नालीए।[5]छत्तस्स, [4]य, [6]धार, [7]ऽणट्ठाए॥[8]तेगिच्छं, [9]पाहणा,

पगों में पेरने। आरंभ करना, फेर अग्निका।४। शय्यातरका,आहारादि लेना,फेर। सादडी-पर बैठना, पलंग आदिमें सुणा।
[10]पाए। [13]समारंभं, [11]च [12]जोइणो॥४॥ [1]सिज्जायर, [2]पिंडं, [3]च। [4]आसंदी, [5]पलियंकए।

१ रहनेमि भोगोंसे निवर्ता वैसे। २परिग्रह रहित। ३आगे लिखी बावन बातें। ४ रागादि ग्रंथ(धन)रहित। ५साधुके वास्ते बनाया आहारादि। ६चंदनादि लगाना। ७रातको। ८वा निमित्त कहना।

दो घरोंके बीचमें,बैठे सुवे,फेर । शरीरका मेल पीठी आदिसे उतारणा,फेर ।८। गृहस्थकी वेयावच्च करना । जो,फेर,जाति आदिसेनिर्वाहचलाना।
[७]गिहंतर, [८]निसिज्जा, [९]य । [१०]गायस्सुव्वट्टणाणि, [९]य ।५। [१]गिहिणोवेयावडियं । [३]जा, [२]य, [४]आजीववत्तिया ॥

तपाया,नहीं अचित्तहुआ पाणी,पीणा ।[1]पीडानेपर,पूर्वसुखस्मरण करना[2],फेर ।६। सचित्त-मूला,आदु, और । शेलडीके टुकडे,नहीं अचित्तहुए ।
[५]तत्ता, [६]ऽनिव्वुड, [७]भोइत्तं । [९]आउर, [१०]स्सरणाणि, [८]य ॥६॥ [२]मूलए, [३]सिंगबेरे, [४]य । [५]उच्छु खंडे, [१]अनिव्वुडे ॥

कंद वज्रादि,[3]मूल,फेर, सचित्त । फल,तिलादि बीज,और,सचित्त(कच्चे) ।७। संचललूण, सिंधालूण,कच्चासांभरलूण। रोमालूण(खाणका),
[७]कंदे, [८]मूले, [९]य, [६]सच्चित्ते । [११]फले, [१३]बीए, [१२]य, [१०]आमए ॥७॥ [२]सोवच्चले, [३]सिंधवे, [४]लोणे । [५]रोमालोणे,

फेर, सचित्त। समुद्रकालूण,उषरभूमिकालूण, और । कालालूण लेना, और, सचित्त ।८। [4]धूपकरणा[5],इसीतरह, वमन करना,फेर ।
[६]य, [७]आमए ॥ [८]सामुद्दे, [१०]पंसुखारे, [९]य । [१२]कालालोणे, [११]य, [१]आमए ॥८॥ [१]धूवणे, [२]त्ति, [३]वमणे, [४]य ।

बस्तिकर्म करना[6], जुलाबलेना । काजलादिआंजना,काष्ठ दातण करना,फेर। शरीरमें तेल मसलके,शोभा करनी ।९। सब[बावन बातें], ये,
[५]वत्थिकम्मे, [६]विरेयणे ॥ [७]अंजणे, [८]दंतवण्णे, [९]य । [१०]गायाऽभ्भंग, [११]विभूसणे ॥९॥ [९]सव्व, [८]मेअ,

नहीं आचरणे योग्यहै । निर्ग्रंथ महर्षि-साधुओंकुं । संजममें, फेर,युक्त(उद्यमवाले) । वायुकी तरह, अप्रतिबद्ध विचरणेवाले ।१०।
[१०]मणाइण्णं । [१]निग्गंथाण, [७]महेसिणं ॥ [२]संजमम्मि, [४]य, [३]जुत्ताणं । [५]लहुभूय, [६]विहारिणं ॥१०॥

---

१ भूँखसे या रोगादिसे । २ या दोषित(आचारहीन)को आश्रय देना । ३ साटे आदिके । ४ सुगंधकेलिये वस्त्रादिको । ५ या रोगशांतिकेलिये धूँआ पीना । ६ पेटका मल निकालना ।

[1]पांच आश्रवोंकुं,सबतरह जाणनेवाले। तीन गुप्तिवाले,छजीव निकायमें,अच्छिद्यावाले। पांच इंद्रियोंकुं,जीतनेवाले,धीरजवाले। निर्ग्रंथ[साधु],
[1]पंचासव [2]परिण्णाया। [3]तिगुत्ता, [4]छसु, [5]संजया॥ [6]पंच, [7]निग्गहणा, [8]धीरा। [9]निग्गंथा,
सरल,देखनेवाले[होतेहैं] ।११। आतापना लेतेहैं, उनालेमें। सियालेमें,खोले शरीरे रहे। वरसालेमें,शरीर संकोचे हुए। संयमी[साधु],
[10]उज्जु, [11]दंसिणो ॥११॥ [2]आयावयंति, [1]गिम्हेसु। [3]हेमंतेसु,अवाउडा॥ वासासु, पडिसंलीणा। संजया,
ज्ञानादिमें भले उद्यमवाले रहे ।१२। बावीस परीषह रूप,रिपु[शत्रु]कुं दमनेवाले। त्यागाहै मोह जिणोंने,जीति इंद्रियांवाले ऐसे। सर्व दुःखोंकुं,
सुसमाहिया ॥१२॥ [1]परीसह, [2]रिउ [3]दंता। [4]धूअमोहा, [5]जिइंदिया॥ [6]सव्वदुक्ख,
नाश करनेके वास्ते। उद्यम करतेहैं,मोटे ऋषि[साधु-साध्वी] ।१३। [2]दुष्कर आचारका,पालन करके। दुःखे सहसकेवैसे,[3]सहन करके, फेर।
[4]पहीणऽट्ठा। [5]पक्कमंति, [6]महेसिणो ॥१३॥ [1]दुक्कराइं, [2]करित्ताणं। [4]दुस्सहाइं, [5]सहेत्तु, [3]य॥
कितनेक,यहां[संसारमें],देवलोकोंमें[जातेहैं]। कितनेक, सिद्धहोतेहैं, कर्मरजरहित हुए ।१४। खपाके, [बाकी रहे]पूर्व कर्मोंकुं। संजम करके,
[7]के, [8]इत्थ, [8]देवलोएसु। [9]केइ, [11]सिज्झंति, [10]नीरया ॥१४॥ [5]खवित्ता, [4]पुव्वकम्माइं। [1]संजमेण,
तप करके, और। सिद्धि[मोक्ष]मार्गकुं, प्राप्तहुए। [स्व-परके]रक्षक,सर्वप्रकारे,निर्वाण[मोक्ष]जातेहैं ।१५। ऐसा,बोलताहूं।
[3]तवेण, [2]य॥ [6]सिद्धिमग्ग,[7]मणुप्पत्ता। [8]ताइणो, [9]परि, [10]निव्वुडे ॥१५॥ त्ति, बेमि।

१ हिंसा झूंट चोरी आदि। २ उपर कहे बावन अनाचारोंका त्यागरूप। ३ आतापना लेना आदि।

ढंढण रिषि सज्झाय १३४

ढंढण रिषिजीने वंदणा हुंवारी, उत्कृष्टो अणगार रे हुंवारी लाल ॥ अभिग्रह लीधो एहवो हुं०, लेश्युं सुद्ध आहार रे हूं०,ढं० ।१। नितप्रति जावे गोचरी हूं०,न मिले शुद्ध आहार रे हूं० ॥ मूल न ले अणसूझतो हूं०,पंजर कीधो गात रे हूं०,ढं० ।२। हरि पूछे श्रीनेमिने हूं०, मुनिवर सहस अढार रे हूं० ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हूं०, मुझने कहो विचार रे हूं०, ढं० ।३। ढंढण अधिको दाखियो हूं०,श्रीमुख नेमि जिणंद रे हूं० ॥ कृष्ण उमाह्यो वांदवा हूं०, धन जादव कुलचंद रे हूं०, ढं० ।४। गलियारे मुनिवर मिल्या हूं०, वांद्या कृष्ण नरेस रे हूं०॥ किणही मिथ्यात्वी देखिने हूं०,आण्यो भाव विसेस रे हूं०,ढं०।५। मुझ घर आवो साधूजी हूं०,ल्यो मोदक छे शुद्ध रे हूं०। मुनिवरविहरीने पांगुर्या हूं०, आया प्रभुजीने पास रे हूं०,ढं०।६। मुझ लब्धे मोदक मिल्या हूं०,कहोने तुम किरपाल रे हूं०॥ लब्धि नहीं वच्छ ताहरी हूं०, श्रीपति लब्धि निहाल रे हूं०, ढं०।७। ए लेवा जुगतो नहीं हूं०,चाल्या परठवा काज रे हूं०॥ ईंटनिवाहे जाइने हूं०,चूरे करम समाज रे हूं०, ढं० ॥८॥ आणी सूधि भावना हूं०,पाम्यो केवल नाण रे हूं०॥ ढंढण रिषिमुगते गया हूं०,कहे 'जिनहर्ष' सुजाण रे हूं०, ढं० ॥ ९ ॥

१३५ स्वार्थ सज्झाय

स्वारथकी सब हैरे सगाई, कुण माता कुण बेनडभाई । स्वारथे भोजन भक्त सगाई । स्वारथ विन कोई पाणी न पाई । स्वा०॥१॥ स्वारथे मा बाप शेठ बडाई, स्वारथ बिन नितहोत लडाई स्वा०॥२॥ स्वारथे नारी दासी कहावे, स्वारथ विना लाठी ले धाई स्वा०॥३॥ स्वारथे चेला गुरु गुरुभाई । स्वारथ विना नहीं होत सहाई ॥ स्वा०॥४॥ 'समयसुंदर' कहे सुणो लोक लुगाई,स्वारथ है भाइ परम सगाई स्वारथ० ॥५॥

सज्झाय निक्षेप विधि १३६

साल भरमें दो वेला. चैत्र सुदि तथा आसोज सुदि पांचमके दिन दुपहर बाद इरियावहि पडिक्कमके खमा० देके 'इच्छा० संदि० भग०! सज्झाय निक्खिवणऽत्थं मुहपत्ति पडिलेहूं ?, इच्छं' कहके मुहपत्ति पडिलेहे और वांदणे देवे, खमा० देके कहे 'इच्छा० संदि० भग०! सज्झाय निक्खिवुं?' गुरु कहे 'निक्खिवह' बाद 'इच्छं' कहकर खमा० देके कहे 'इच्छा० संदि० भग०! सज्झाय निक्खिवणऽत्थं काउस्सग्ग करूं?' गुरु कहे 'करेह' बाद 'इच्छं सज्झाय निक्खिवणऽत्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ०'

१३७ चैत्री काउस्सग्ग

कहके १ नवकारका काउस्सग्ग करे, पारके प्रगट नवकार १ कहे। खमा० देके अविधि आशातना खमावे।

चैत्र सुदि १० के बाद ११से १३ तक या १२से १४ तक अथवा १३से १५ तक लगोलग तीन दिन देवसी पडिक्कमणेके बाद खमा० देके 'इच्छा० संदि० भग०! सचित्त अचित्तरज ओहडावणत्थं काउस्सग्ग करूं ?, इच्छं सचित्त अचित्तरज ओहडावणत्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ०' कहके ४ लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारके प्रगट लोगस्स कहे।

सज्झाय उत्क्षेप विधि १३८

कार्तिक वदि तथा वैशाख वदि एकमके बाद जिसदिन अश्विनी. भरणी. रोहिणी. आर्द्रा. पुष्य. अश्लेषा. मघा. पूर्वाफाल्गुनी. हस्त. स्वाति. अनुराधा. मूल. पूर्वाषाढा. श्रवण. शतभिषक्. उत्तराभाद्रपद. तथा रेवती. इनमेंसे कोइभी नक्षत्र होवे. और गुरुवार या सोमवार होवे उस दिन, अथवा मंगलवार और शनिवारकुं छोडके चाहे जिसवारके दिन कपडे धोकर उपासरेमेंसे काजा निकालके परठे, और वसति संशोधन करे, जो कोइ हाडका या कलेवर होवे उसको दूर हटवाके उपासरेमें आकर सब जणे इरियावहि पडिक्कमे, बादमें वसति संशोधन करनेवाला खमा० देके कहे 'इच्छा० संदि० भग०! वसति पवेउं ?' गुरु कहे 'पवेयह। इच्छं इच्छामि खमा० देके कहे 'भगवन्! सुद्धावसहि' गुरु कहे 'तहत्ति'। सब जणे खमा० देके 'इच्छा० संदि० भग०! मुहपत्ति पडिलेहूं ? इच्छं' कहके मुहपत्ति पडिलेहके वांदणे देवे, खमा० देके 'इच्छा संदि० भग०! छम्मासियकप्पसंदिसाउं !' इच्छं इच्छामि खमा० 'इच्छा० संदि० भग०! छम्मासियकप्पपडिग्गहूं ?' इच्छं इच्छामि खमा० 'इच्छा० संदि० भग०! सज्झाय उक्खिवणऽत्थं मुहपत्तिपडिलेहूं ? इच्छं' कहकर मुहपत्ति पडिलेहके वांदणे देवे, खमा० देके कहे 'इच्छा० संदि० भग०! सज्झाय उक्खिवुं ?' गुरु कहे 'उक्खिवह' इच्छं कहके फिर खमा० देके कहे 'इच्छा० संदि० भग०! सज्झाय उक्खिवणऽत्थं काउस्सग्ग करूं ?' गुरु कहे 'करेह' बाद 'इच्छं सज्झाय उवक्खिवणत्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ०' कहके १ नवकार अथवा १ लोगस्सका

काउस्सग्ग करे, पारके प्रगट १ नवकार या १ लोगस्स कहे। खमा० देके 'इच्छा० संदि० भग०! असज्झायअणाउत्तओहडावणऽत्थं काउस्सग्ग करूं ?, इच्छं असज्झायअणाउत्तओहडावणऽत्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ०' कहके ४ लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारके प्रगट लोगस्स कहे। फिर खमा० देके इसीतरह 'खुद्दोवद्दवओहडावणऽत्थं' काउस्सग्ग ४ लोगस्सका करे, पारके प्रगट लोगस्स कहे। फिर खमा० देके 'इच्छा० संदि० भग०! सक्काइवेयावच्चगरआराहणऽत्थं काउस्सग्ग करूं ?, इच्छं सक्काइवेयावच्चगरआराहणऽत्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ०' कहके ४ लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारके प्रगट लोगस्स कहे। खमा० देके 'इच्छा० संदि० भग०! सज्झाय संदिसाउं ?' इच्छं इच्छामि खमा० 'इच्छा० संदि० भग०! सज्झाय करूं ? इच्छं' कहके गोडोंसे बैठकर १ नवकार तथा दशवैकालिकके 'धम्मो मंगल' आदि तीन अध्ययन कहके उपर १ नवकार गिणे. खमा० देके अविधि आशातना खमावे।

१३०
लोच करने कराने का विधि

गुरुके आगे इरियावहि पडिक्कमके खमा० देकर 'इच्छा० संदि० भग०! लोच मुहपत्ति पडिलेहूं ?, इच्छं' कहके मुहपत्ति पडिलेहे, वांदणे देवे, खमा० देके कहे 'इच्छा० संदि० भग०! लोच संदिसाउं ?' गुरु कहे 'संदिसावेह' इच्छं इच्छामि खमा० देके कहे 'इच्छा० संदि० भग०! लोच कराउं ?,(खुदके हातसे करे तो कहे 'लोच करूं ?')गुरु कहे–'करावेह(करेह) अणुन्नायं मए' बाद 'इच्छं' कहके खमा० देवे।

लोच करनेवाला करानेवालेसे यदि छोटा हो ? तो लोच करनेवाला करानेवालेके आगे खमा० देके कहे 'इच्छा० संदि० भग०! उच्चासण संदिसाउं ?, इच्छं इच्छामि खमा०, 'इच्छा० संदि० भग०! उच्चासण ठाउं ?, इच्छं' कहके खमा० देवे। लोच करानेवाला करनेवालेसे यदि छोटा हो तो लोच करानेवाला करनेवालेके आगे खमा० देके कहे 'इच्छकारी भगवन् ! लोयं करेह, इच्छं' कहके, खमा० देवे।

जिस दिन बुद्ध. गुरु. शुक्र या सोमवार होवे तथा पुनर्वसु. पुष्य. रेवती. चित्रा. श्रवण. धनिष्ठा. मृगशिरा. अश्विनी. हस्त इनमेंसे कोइभी नक्षत्र होवे अथवा कृत्तिका. विशाखा. मघा और भरणी. इन चार नक्षत्रोंको छोडके चाहे जो नक्षत्र होवे उस दिन

लोच कराना. योगिनी (जोगणी)को पूंठमें अथवा डावी बाजु रखके लोच करानेको बैठना। १-९ को पूर्वमें, ३-११ को अग्नि खुणेमें, ५-१३ को दक्षिणमें, ४-१२ को नैर्ऋत्य खुणेमें, ६-१४ को पश्चिममें, ७-१५ को वायव्य खुणेमें, २-१० को उत्तरमें, ८-३० ईशान खुणेमें. योगिनी रहतीहै। लोच करा चुके बाद लोच करनेवालेके हात दबावे. और स्थापनाचार्यके आगे इरियावहि पडिक्कमे, खमा० देके 'इच्छा० संदि० भग०! चैत्यवंदन करूं?, इच्छं' कहकर "जयउ सामिय" चैत्यवंदन तथा जं किंचि-नमुत्थुणं-जावंति चेइयाइं जावंत केवि साहू-नमोऽर्हत्-उवसग्गहरं तथा जय वीयराय! कहके गुरुके पास आकर मुहपत्ति पडिलेहके वांदणे देवे और आगे लिखे मुजब ७ खमा० देवे-१ खमा० देके कहे 'इच्छा० संदि० भग०! लोच पवेउं?' गुरु कहे 'पवेयह'। २ इच्छं इच्छामि खमा० देके कहे 'संदिसह किं भणामो?' गुरु कहे 'वंदित्ता पवेयह'। ३ इच्छं इच्छामि खमा० देके कहे 'केसा मे पज्जुवासिया' गुरु कहे 'दुक्करं कयं इंगिणी साहिया' बाद 'इच्छामो अणुसट्ठिं' कहे। ४ खमा० देके कहे 'तुम्हाणं पवेइयं संदिसह साहूणं पवेएमि' गुरु कहे 'पवेयह'। ५ इच्छं इच्छामि खमासमणो देके तीन नवकार गिणे। ६ खमा० देके कहे 'तुम्हाणं पवेइयं साहूणं पवेइयं संदिसह काउस्सग्गं करेमि' गुरु कहे 'करेह'। ७ इच्छं इच्छामि खमा० देके 'केसेसु पज्जुवासिज्जमाणेसु सम्मं जं न अहियासिअं. कुइअं. कक्कराइअं. छिअं. जंभाइअं. तस्स ओहडावणियं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ०' कहके "सागरवरगंभीरा" तक १ लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारके प्रगट लोगस्स कहे, बाद गुरुको तथा सभी बडे साधुओंको वंदना करे।

अपने हातसेही यदि लोच करे? तो लोच कर चुके बाद इरियावहि पडिक्कमके 'जयउ सामिय!' चैत्यवंदन-जं किंचि-नमुत्थुणं आदि जय वीयराय! तक कहके गुरु आदि सभी बडे साधुओंको वंदना करे, बाकी मुहपत्ति पडिलेहण सात खमासमणे देने आदि न करे।

कल्याण श्रेय वीरनुं कहुं, इंद्र माता भद्रबाहु सूरींद। श्रेय कल्याण सुपरुपक, नमुं जिनदत्त सूरींद ॥१॥

सिद्धाचल मंडण ऋषभ जिन स्तवन १३८

श्रीसिद्धाचल मंडण स्वामी रे, जग जीवन अंतरजामी रे। ए तो प्रणमूं हूं शिर नामी, जात्रीडा ! जात्रा नवाणुं करिये रे–करिये तो भवजल तरिये। जात्री० ॥१॥ श्री ऋषभ जिनेश्वर राया रे, जिहां पूर्व नवाणुं आया रे। प्रभु समवसर्या सुखदाया। जात्री० ॥२॥ चैत्री पूनम दिन वखाणुं रे, पांच कोडीसुं पुंडरीक जाणुं रे। जे पाम्या पद निरवाणुं। जात्री० ॥३॥ नमि विनमि राजा सुख साते रे, बे बे कोडी साधु संघाते रे। ए तो पहोंता पद लोकांते। जात्री० ॥४॥ कार्तिक पूनमें कर्मने तोडी रे, जिहां सिद्धा मुनि दश कोडी रे। ते तो वंदो बे कर जोडी। जात्री० ॥५॥ इम भरतेसरने पाटे रे, असंख्याता मुनि थिर थाटे रे। पाम्या मुगति रमणी ए वाटे। जात्री० ॥६॥ दोय सहस मुनि परिवार रे, थावच्चा सुत सुखकार रे। सयां पंच सैलग अणगार। जात्री० ॥७॥ वली देवकी सुत सुजगीस रे। सिद्धा बहु जादव वंस रे। ते तो प्रणमो रे मन हंस। जात्री० ॥८॥ पांचे पांडव एणे गिरि आया रे, सिद्धा नव नारद ऋषि राया रे। वली सांब प्रद्युम्न कहाया। जात्री० ॥९॥ ए तीरथ महिमा वंत रे, जिहां साधु सिद्धा अनंत रे। इम भाषे श्रीभगवंत। जात्री० ॥१०॥ उज्ज्वल गिरि समो नहीं कोय रे, तीरथ सघला मैं जोय रे। जे फरस्यां पावन होय। जात्री० ॥११॥ एकल आहारी सचित्त परिहारी रे, पद चारीने भूमि संथारी रे, शुद्ध समकितने ब्रह्मचारी। जात्री० ॥१२॥ एम छह री जेनर पाले रे, बहु दान सुपात्रे आले रे। ते जनम मरण भय टाले। जात्री० ॥१३॥ धन धन ते नरने नारी रे, भेटे विमलाचल एक तारी रे। जाउं तेहनी हूं बलिहारी। जात्री० ॥१४॥ श्रीजिनचंद्रसूरि सुपसाये रे, 'जिनहर्ष' हिये हुलसाये रे। इम विमलाचल गुण गाये। जात्री० ॥१५॥

१३९ सिद्धगिरि स्तवन

भाव धरि धन्य दिन आज सफलो गिणुं, आज मैं सजनी आनंद पायो। हर्ष भरि निजर धरि विमल गिरि निरख करि, रजत मणि कनक मोतीयन वधायो ॥ भाव० ॥१॥ पग पग ऊमंग धर पंथ नित पूछतां, धन्य दोय चरण इहां चलत आयो। आज

धन दीह जागी सुकृतकी दशा, आज धन दीह गिरि सुजस गायो ॥ भाव०॥२॥ दूर दुरगति टली यात्रा विधिशुं करी, पुण्य भंडार पोते भरायो। वदत 'जिनराज' मणिरंग सुर गिरि शिखर, ऋषभ जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ भाव० ॥ ३ ॥

१४० ऋषभ जिनेसर स्तवन

ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिब, वीनतडी अवधारो रे (जगना तारू, मुझ तारोजी कृपानिधि स्वामी)। जग जसवाद प्रगट छे ताहरो, अविचल सुख दातारो रे ॥ ज० मु० ॥१॥ निजगुण भोक्ता परगुण लोप्ता, आतम शक्ति जगाया रे ॥ ज० ॥ अविनाशी अविचल अविकारी, शिववासी जिन राया रे ॥ ज० मु० ॥ २ ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी, हूँ तुज चरणे आयो रे ॥ ज० ॥ तुम रीझावण हेते ततखिण, नाटक खेल मचायो रे ॥ ज० मु० ॥ ३ ॥ काल अनंत रह्यो एकेन्द्री, तरु साधारण पामी रे ॥ ज० ॥ वरस संख्याता वलि विकलेंद्री, वेष धर्या दुःख धामी रे ॥ ज० मु० ॥ ४ ॥ सुर नर तिरि वलि नरक तणी गति, पंचेंद्रीपणो धार्यो रे ॥ ज० ॥ चौवीसे दण्डक मांही भमियो, अब तो हूं पिण हार्यो रे ॥ ज० मु० ॥ ५ ॥ भव नाटक नित करतो नवनव, हूं तुझ आगल नाच्यो रे ॥ ज० ॥ समरथ साहिब सुरतरु सरिखो, निरखी तुझने जाच्यो रे ॥ ज० मु० ॥ ६ ॥ जो मुझ नाटक देखी रिझया, तो मुझ वांछित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रिंझया तो मुझ भाखो, वलि नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० मु० ॥ ७ ॥ लालच धरि हूं सेवा सारूं, तूं दुखडा नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता सेती सूंब भलेरो, वहिलो उत्तर आपे रे ॥ ज० मु० ॥ ८ ॥ तुम सरिखा साहिब पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ ज० ॥ तो मुझ करम तणी गति अवली, दोष न कोई तुमारो रे ॥ ज० मु० ॥ ९ ॥ दीन दयाल दया करि दीजे, शुद्ध समकित सहिनाणी रे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वांछित पूरो, तेहिज गुण मणि खाणी रे ॥ ज० मु० ॥ १० ॥ वर्ष अढारे गुणतालीसे, जेष्ठसुदी सोमवारो रे ॥ ज० ॥ 'लालचंद' प्रतिपद दिन भेट्या, बीकानेर मझारो रे ॥ ज० मु० ॥ ११ ॥

१४१ जगतमें

जगतमें सदा सुखी मुनिराज, परविभाव परिणतिके त्यागी। जागे आत्मसमाज, निजगुण अनुभवके उपयोगी। योगी ध्यान

जिहाज, ज० ।१। हिंसा मोस अदत्त निवारी, नहीं मैथुनको पास। द्रव्य भाव परिग्रह त्यागी, लीने तत्त्व विलास, ज० ।२। निर्भय निर्मल चित्त निराकुल, वलगे ध्यान अभ्यास। देहादिक ममता सवि वारी, विचरे सदा उदास, ज० ।३। ग्रहे आहार वृत्ति पात्रादिक, संयम साधन काज। 'देवचंद्र' आणानुयायि, निजसंपत्ति महाराज, ज० ।४।

निंदा म करजो कोईनी पारकी रे, निंदामां बोल्यां महापाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे, निं० ॥१॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हे रे, पगमां बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमां धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजलां होय रे, निं० ॥२॥ आप संभालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको परी टेव रे॥ थोडे घणे अवगुणें सहु भर्या रे, केहनां नलीयां चुए केहनां नेव रे, निं० ॥३॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेम छुटकबारो थाय रे,निं०॥४॥ गुण ग्रहजो सहुको तणो रे,जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे,'समयसुंदर' सुखकार रे,निं०॥५॥

जल जलती मिलती घणी रे लाल, झालो झाल अपार रे सुजाण सीता॥ जाणे केसू फूलियां रे लाल, राता खेर अंगार रे सु० ॥१॥ धीज करे सीतासती रे लाल, शील तणे परिमाण रे सु० ॥ लखमण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणो राण रे सु० ॥२॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पावक पासें आय रे सु०॥ उभी जाणे सुरांगना रे लाल, अनुपम रूप दिखाय रे सु० ॥३॥ नर नारी मिलियां घणां रे लाल, उभा करे हाय हाय रे सु०॥ भस्म हुशी इण आगमें रे लाल,राम करे अन्याय रे सु० ॥४॥ राघव बिण वांछ्यो हुवे रे लाल, सुपनेही नर कोय रे सु० ॥ तो मुझ अगन प्रजालजो रे लाल, नहिं तो पाणी होय रे सु० ॥५॥ इम कही पेठी आगमें रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे सु० ॥ जाणे द्रह जलशुं भर्यो रे लाल, झीले धरम सुधीर रे सु० ॥६॥ देव कुसुम वरषा करे रे लाल, एह सती शिरदार रे सु० ॥ सीता धीजें उतरी रे लाल, साख भरे संसार रे सु० ॥७॥ रलियायत सहुको

थयां रे लाल, सघले थया उछरंग रे सु० ॥ लखमण राम खुशी थया रे लाल, सीता शील सुरंग रे सु० ॥८॥ जगमांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे सु०॥ कहे 'जिनहर्ष' सती तणा रे लाल, नित प्रणमीजे पाय रे सु०॥९॥ इति सीता सती सज्झाय समाप्त ॥

१४४ अनाथी मुनिकी सज्झाय

श्रेणिक रयवाडी चढ्यो, पेखियो मुनि एकंत ॥ वर रूपकांते मोहियो, राय पूछे रे कहो विरतंत ॥१॥ श्रेणिकराय ! हुं रे अनाथी निग्रंथ ॥ तिणमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए आंकणी ॥ इण कोसंबी नगरी वसे, मुझ पिता परिगल धन्न ॥ परिवार पूरें परिवर्यो हुं, छुं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥२॥ एक दिवस मुझ वेदना, उपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सहु झूरी रह्या, तोहीं पण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥३॥ गोरडी गुण मणि ओरडी, छोरडी अबला नार ॥ कोरडी पीडा में सही, नहिं कीधी रे मोरडी सार ॥ श्रे० ॥४॥ बहु राजवैद्य बुलाविया, कीधला कोडी उपाय ॥ बावना चंदन चरचीया, पण तोही रे दाह नवि जाय ॥ श्रे० ॥५॥ वेदना जो मुझ उपसमें, तो लेउं संजमभार ॥ इम चिंतवतां वेदना गई, व्रत लीधो रे हरष अपार ॥ श्रे० ॥६॥ जगमांहे को केहनो नहिं, ते भणी हुं रे अनाथ ॥ वीतरागना धरम बाहरो, कोइ नहिं रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥७॥ करजोडी राजा गुण स्तवे, धन धन तूं अनगार ॥ श्रेणिक समकित तिहां लहे, वांदी पहुंचे रे नगर मझार ॥ श्रे० ॥८॥ मुनिवर अनाथी गुण गावतां, कर्मनी तूटे कोडी ॥ गणि 'समयसुंदर' तेहना, पाय वांदे रे बे कर जोडी ॥ श्रे० ॥९॥

१४५ समकित नवि लह्युं सज्झाय

समकित नवि लह्युं रे, एतो रुल्यो चतुर्गति मांहे । त्रस थावरकी करुणा कीनि, जीव न एक विराध्यो । तीन काल सामायिक करतां, सुध उपयोग न साध्यो, समकित० ॥१॥ झूठ बोलवाको व्रत लीनो, चोरीको पण त्यागी । व्यवहारादिक महा निपुण भयो, पण अंतर दृष्टि न जागी, समकित० ॥२॥ ऊर्ध्व भुजा करि उंधो लटके, भस्म लगाय धूम गटके । जटाजूट सिर मुंडे झूठो, विण श्रद्धा भव भटके, समकित० ॥३॥ निजपरनारी त्यागज करके, ब्रह्मचारी व्रत लीधो ॥ स्वर्गादिक याको फल पामी, निज कारज नवि सिधो,

समकित०॥४॥ बाह्य क्रिया सब त्याग परिग्रह, द्रव्यलिंग धरलीनो। 'देवचंद्र' कहे याविध तो हम, बहुत वार करलीनो॥ समकित०॥५॥

१४६ कर पडिक्कमणो भावशुं सज्झाय

कर पडिक्कमणो भावशुं, दोय घडी शुभध्यान लाल रे॥ परभव जातां जीवने, संबल साचुं जाण लाल रे॥१॥ कर पडिक्कमणुं भावशुं, ए आंकणी॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रेणिकराय प्रतिबोध ला०। लाख खांडी सोना तणी, दीये दिनप्रति दान ला० ॥२॥ कर०॥ लाख वरस लगे ते वली, एम दिये द्रव्य अपार ला०॥ एक सामायिकनी तुला, नावे तेह लगार ला०॥ ३ ॥ कर०॥ सामायिक चउविसत्थो भलुं, वंदन दोय दोय वार ला०॥ व्रत संभारो आपणां, ते भवकर्म निवार लाल रे ॥४॥ कर०॥ कर काउस्सग्ग शुभ ध्यानथी, पच्चख्खाण सूधुं विचार लाल रे॥ दोय संध्याये ते वली, टालो टालो अतिचार लाल रे ॥५। कर०॥ सामायिक परसादथी, लहिये अमर विमान लाल रे॥ 'धरमसिंह!' मुनिवर कहे, मुगति तणुं ए निदान ला०।६॥ कर०॥

१४७ अरणिक मुनिकी सज्झाय

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी, तडके दाझे सीसो जी। पाय अळवाणे रे वेलु पर जले, तन सुकुमाल मुनीसो जी, अ० ॥१॥ मुख कमलाणो रे मालती फूलज्युं, उभो गोखने हेठो जी। खरे बपोरे रे दीठो एकलो,मोही माननी मीठो जी, अ०॥२॥ वयण रंगीली रे नयणे विंधियो, रिषि थंभ्यो तिणठाणो जी। दासीने कहे जाय उतावली,एरिषि तेडी आणो जी,अ० ॥३॥ पावन कीजे रिषिवर आंगणो, वहोरो मोदक सारो जी। नव जोबन रस काया कांइ दहो, सफल करो अवतारो जी, अ० ॥४॥ चंद्रावदनी रे चारित्र चूकव्यो, सुखविलसै दिन रातो जी। एकदिन गोखे रे रमतो सोगटे,तब दीठी निज मातो जी,अ० ॥५॥ अरणिक अरणिक करती मा फिरे,गलिये गलिये मझारो जी। कहो किणे दीठो रे माहरो अरणिको, पूछे लोक हजारो जी, अ० ॥६॥ उतरी तिहांथी रे जननी पाय नम्यो, मनमें लाज्यो तिवारो जी। धिग् धिग् पापी रे माहरा जीवने, एह मे अकारज कीधो जी, अ० ॥७॥ अगन धखंती रे सीला उपरे, अरणिक अणसण कीधो जी। 'समयसुंदर' कहे धन ते मुनिवरू, मनवंछित फल लीधो जी, अ० ॥ ८ ॥

कथनी कथे सहु कोइ पद १४८

कथनी कथे सहु कोइ, रहनी अति दुर्लभ होइ। कथ०। ए आंकणी। शुक रामको नाम वखाणे, नवि परमारथ तस जाणे। या विध भणी वेद सुणावे, पण अकलकला नवि पावे, कथ० ।१। षट्त्रीश प्रकारे रसोइ, मुख गिणतां तृप्ति न होइ। शिशु नाम नहीं तस लेवे, रस स्वादत सुख अति लेवे, कथ० ।२। बंदी जन कडखा गावे, सुणी सूरा सीस कटावे। जब रुंड मुंडता भासे, सहु आगल चारण नासे, कथ०।३। कहणी तो जगत मजूरी, रहणी हे बंदी हजूरी। कहणी साकर सम मीठी, रहणी अति लागे अनीठी, कथ० ।४। जब रहणीका घर पावे, कथनी तब गिनती आवे। अब 'चिदानंद!' इम जोई, रहणीकी सेज रहे सोई, कथ० ।५।

लघुशांति १४९

शांतिं शांति-निशांतं, शांतं शांताऽशिवं नमस्कृत्य। स्तोतुः शांति-निमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि १ ओमिति निश्चित-वचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्। शांति-जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥२॥ सकलाऽतिशेषक-महा, सम्पत्ति-समन्विताय शस्याय। त्रैलोक्य-पूजिताय च, नमो नमः शांति-देवाय ॥३॥ सर्वामर-सुसमूह, स्वामिक-संपूजिताय निजिताय। भुवन-जन पालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥४॥ सर्व-दुरितौघ नाशन, कराय सर्वाऽशिव प्रशमनाय। दुष्ट ग्रह भूत पिशाच, शाकिनीनां प्रमथनाय ॥५॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधान वाक्योपयोग कृत तोषा। विजया कुरुते जन हित, मिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥६॥ भवतु नमस्ते भगवति!, विजये! सुजये!

परापरैरजिते !। अपराजिते ! जगत्या, जयतीति जयावहे भवति ! ॥७॥ सर्वस्यापि च संघस्य, भद्र कल्याण मंगल प्रददे। साधूनां च सदा शिव,सुतुष्टि पुष्टि प्रदे जीया:॥८॥ भव्यानां कृतसिद्धे !,निर्वृत्ति निर्वाण जननि ! सत्त्वानाम् । अभय प्रदान निरते !, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे ! तुभ्यम् ॥९॥ भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते ! देवि !। सम्यग्दृष्टीनां धृति,रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥१०॥ जिन शासन निरतानां,शांति नतानां च जगति जनतानाम् । श्रीसम्पत्कीर्तियशो,वर्द्धनि ! जय देवि ! विजयस्व ॥११॥ सलिलानल विष विषधर, दुष्ट ग्रह राज रोग रण भयत: । राक्षस रिपु गण मारि,चौरेति श्वापदादिभ्य: ॥१२॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति। तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं,कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वम् ॥१३॥ भगवति !गुणवति ! शिवशांति,तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम्। ओमिति नमो नमो ह्राँ, ह्रीँ ह्रूँ ह्र: य: क्ष: ह्रीँ फुट् फुट् स्वाहा ।१४। एवं यन्नामाक्षर,पुरस्सरं संस्तुता जया देवी। कुरुते शांतिं नमतां,नमो नम: शांतये तस्मै ।१५। इति पूर्व सूरि दर्शित,मंत्र पद विदर्भित: स्तव: शांते: । सलिलादि भय विनाशी,शांत्यादिकरश्च भक्ति-

मताम् ॥१६॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोगम्। स हि शान्ति पदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ।१७। उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः। मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ।१८। सर्व मङ्गल माङ्गल्यं, सर्व कल्याण कारणम्। प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ।१९।

भो भो भव्याः! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभाजः। तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा-दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥१॥ भो भो भव्य-लोका! इह हि भरतैरावतविदेहसंभवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानंतरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे विहितजन्माभिषेकः शान्तिमुद्घोषयति ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा 'महाजनो येन गतः स पन्थाः' इति भव्यजनैः सह समागत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय शान्तिमुद्-घोषयामि तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा।

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोक-

महितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः। ॐ श्री केवलज्ञानि निर्वाणि सागर महा-
यश विमल सर्वानुभूति श्रीधर दत्त दामोदर सुतेजा स्वामि मुनिसुव्रत सुमति शिवमति अस्ताघ
नमीश्वर अनिल यशोधर कृतार्थ जिनेश्वर शुद्धमति शिवकर स्यन्दन संप्रति एते अतीत चतुर्विंशति-
तीर्थंकराः ॥ ओं श्रीऋषभ अजित संभव अभिनन्दन सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्व चन्द्रप्रभ सुविधि
शीतल श्रेयांस वासुपूज्य विमल अनन्त धर्म शान्ति कुन्थु अर मल्लि मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व
वर्द्धमान एते वर्तमान जिनाः॥ ओं श्री पद्मनाभ शूरदेव सुपार्श्व स्वयंप्रभ सर्वानुभूति देवश्रुत उदय
पेढाल पोट्टिल शतकीर्ति सुव्रत अमम निष्कषाय निष्पुलाक निर्मम चित्रगुप्त समाधि संवर यशोधर
विजय मल्लि देव अनन्तवीर्य्य भद्रंकर एते भावितीर्थंकराः जिनाः शांताः शांतिकराः भवंतु, ओं मुनयो
मुनिप्रवरा रिपु विजय दुर्भिक्ष कान्तारेषु दुर्ग मार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यम्। ओं श्रीनाभि जितशत्रु
जितारि संवर मेघ धर प्रतिष्ठ महसेन नरेश्वर सुग्रीव दृढरथ विष्णु वसुपूज्य कृतवर्म सिंहसेन भानु
विश्वसेन सूर सुदर्शन कुम्भ सुमित्र विजय समुद्रविजय अश्वसेन सिद्धार्थ इति वर्त्तमान चतुर्विंशति

जिन जनकाः । ओं श्रीमरुदेवा विजया सेना सिद्धार्था सुमंगला सुसीमा पृथिवीमाता लक्ष्मणा रामा नन्दा विष्णु जया श्यामा सुयशा सुव्रता अचिरा श्री देवी प्रभावती पद्मा वप्रा शिवा वामा त्रिशला इति वर्त्तमान जिनजनन्यः॥ ओं श्रीगोमुख महायक्ष त्रिमुख यक्षनायक तुम्बुरु कुसुम मातंग विजय अजित ब्रह्मा यक्षराज कुमार षण्मुख पाताल किन्नर गरुड गन्धर्व यक्षराज कुबेर वरुण भृकुटि गोमेध पार्श्व ब्रह्मशान्ति इति वर्त्तमान जिन यक्षाः॥ ओं चक्रेश्वरी अजितबला दुरितारि काली महाकाली श्यामा शान्ता भृकुटि सुतारका अशोका मानवी चण्डा विदिता अंकुशा कन्दर्पा निर्वाणी बला धारिणी धरणप्रिया नरदत्ता गान्धारी अम्बिका पद्मावती सिद्धायिका इति वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर शासनदेव्यः ओं ह्रीं श्रीं धृति कीर्ति कान्ति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्या साधन प्रवेश निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयन्तु ते जिनेन्द्राः । ओं रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रश्रृंखला वज्रांकुशा चक्रेश्वरी पुरुषदत्ता काली महाकाली गौरी गान्धारी सर्वास्त्रा महाज्वाला मानवी वैरोट्या अच्छुप्ता मानसी महामानसी एताः षोडशविद्यादेव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा। ओं आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्व-

र्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु, ओं तुष्टिर्भवतु, पुष्टिर्भवतु । ओं ग्रहाश्चन्द्र सूर्याङ्गारक बुध वृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतुसहिताः सलोकपालाः सोम यम वरुण कुबेर वासवादित्य स्कन्द विनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्ता प्रीयंतां अक्षीणकोषकोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा । ओं पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृत् स्वजन संबन्धिबन्धुवर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो भवंतु,अस्मिंश्च भूमण्डले आयतननिवासिनां साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाणां रोगोपसर्गव्याधिदुःखदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु । ओं तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि मांगल्योत्सवा भवन्तु सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि शाम्यन्तु शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा। श्रीमते शांतिनाथाय,नमः शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ।१। शांतिः शांतिकरः श्रीमान् ,शातिं दिशतु मे गुरुः। शातिरेव सदा तेषा, येषा शांतिर्गृहे गृहे ।२। ओं उन्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि । संपादितहितसंप,न्नामग्रहणं जयतु शान्तेः ।३। श्रीसंघपौरजनपद,राजाधिपराजसन्निवेशानाम् । गोष्ठिकपुरमुख्याना, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ।४। श्रीश्रमणसंघस्य शांति-

र्भवतु,श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु,श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु,श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु,श्रीराजसन्निवेशाना शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्भवतु,ओं स्वाहा ओं स्वाहा ओं ह्रीँ श्रीँ पार्श्वनाथाय स्वाहा। एषा शान्तिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्राद्यवसानेषु शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचन्दनकर्पूरागुरुधूपवासकुसुमाञ्जलिसमेतः स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः शुचिः शुचिवपुः पुष्पवस्त्रचन्दनाभरणाऽलंकृतः पुष्पमालां कण्ठे कृत्वा शांतिमुद्घोषयित्वा शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति। नृत्यन्ति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मंगलानि। स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मंत्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ।१। अहं तित्थयरमाया,सिवादेवी तुम्हनयरनिवासिनी। अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा।२। शिवमस्तु सर्वजगतः, परहित निरता भवन्तु भूतगणाः। दोषाः प्रयान्तु नाशं,सर्वत्र सुखी भवंतु लोकाः।३। उपसर्ग्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः। मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे।४। सर्वमंगलमांगल्यं,सर्व कल्याण कारणम्। प्रधानं सर्वधर्माणां,जैनं जयति शासनम्।५।

दासानुदासा इव सर्वदेवा, यदीयपादाब्जतले लुठंति॥ मरुस्थलीकल्पतरुः स जीयात्, युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः॥१॥

इसकारणसे, केवातेहैं,साधु(साध्वी) ।५। ऐसा,बोलताहूं[१] । किसतरह,शंकाहोतीहैकि,करे(पाले)गा,साधुपणा। जो,कामभोगोंकुं,नहीं,

तेण, वुच्चंति, साहुणो ॥५॥ त्ति, बेमि । [४]कहं, [१]नु, [५]कुज्जा, [३]सामण्णं।[२]जो, कामे, न,

निवारे(रोके)है(वो)। पगले,पगले,विखवाद पामता। संकल्प[२]के, वशहुआ ।१। वस्त्र, सुगंध, अलंकार। स्त्रीयां, संथारिया(आदि),

निवारए॥ पए, पए,विसीयंतो।संकप्पस्स,वसंगओ॥१॥[२]वत्थ,गंध,मलंकारं।इत्थिओ,[४]सयणाणि,

और।स्वाधीन नहीं(ऐसे),जो, नहीं, भोगवतेहैं। नहीं, वह, त्यागीहै,ऐसा, कहाताहै ।२। जो, फेर, मनोहर, प्रिय, भोगोंकुं। मिलनेपर,

[३]य॥ [१]अच्छंदा, [२]जे, न, भुंजति।[७]न, [६]से, चाइ, त्ति, [८]वुच्चइ॥२॥[१]जे, [५]य, [३]कंते, पिए, भोए। [२]लद्धे,

अनेकतरह पूंठ,कर(त्याग)ताहै। स्वाधीन रहे,त्यागताहै,भोगोंकुं। वह,निश्चय,त्यागीहै,ऐसा,कहाताहै ।३।[१]समान, दृष्टिसे,संजममेंचलते(साधुका)।

[४]विपिट्ठि, कुव्वइ॥ [६]साहीणे, [८]चयइ, [७]भोए।[९]से, हु, चाइ,त्ति,वुच्चइ।३।[१]समाइ,पेहाइ, परिव्वयंतो।

कदाच, मन, निकले(तो), संजमसेबाहर। नहीं है,वो(स्त्री), मेरी, नहींहूं, मैं, भी,उस(स्त्री)का। इसतरह,उन(स्त्रीयों)से, निकालदेवे,

[३]सिया,[२]मणो,[५]निस्सरइ,[४]बहिद्धा॥ [७]न, [६]सा, महं,[८]नोवि,अहं,पि, तीसे। इच्चेव, ताओ, [१०]विणइज्ज,

(मनके)रागकुं।४। आतापना ले. त्याग, सुकुमालपणा। कामभोगोंकुं,उल्लंघ(तो), उल्लंघा, निश्चय, दुःखकुं। छेद(नाश कर), द्वेषकुं,

[९]रागं ।४।[१]आयावयाहि,[३]चय,[२]सोगमल्लं। [४]कामे, कमाहि,[६]कमियं, [५]खु, दुक्खं। [८]छिंदाहि, [७]दोसं,

---

१ मैं सुधर्मास्वामी। २ खराब विचार। ३ स्व परके उपर।

दूर कर, रागकुं। ऐसाकरनेसे, सुखी, होवेगा, संसारमें ।५। पडतेहैं(पण), बलतीहुइ,आगमें। धूँआवाली,दुःखे सहनहो वैसी।
[१०]विणएज्ज, [९]रागं। [११]एवं, [१३]सुही,होहिसि, [१२]संपराए।५। [६]परक्खंदे, [५]जलियं,जोइं। [४]धूमकेउं, [३]दुरासयं॥
नहीं इच्छतेहैं,वमा(विष),भोगव(चूस)ना। कुलमें,जन्मे(सर्प), [१]अगंधन(नामके) ।६। धिक्कार, हो, तेरेकुं,हे अपजसके, अभिलाषी!, जो, तूं,
[८]नेच्छंति, [७]वंतयं, भोत्तुं। [२]कुले, जाया, [१]अगंधणे।६। [३]धिर,ऽत्थु, [२]ते, [१]ऽजसो, कामी! [४]जो,तं,
असंजम जीवणेके लिये। वमे(भोगों)कुं,इच्छताहै(इससे तो जो),पीलेना। श्रेष्ठहै,तेरा,मरणा,होवे(तो) ।७। मैं, फेर,उग्रसेन राजाकी पुत्रीहूं।
जीवियकारणा॥ वंतं, [६]इच्छसि, [५]आवेउं। [८]सेयं, [७]ते,मरणं,भवे॥७॥ [२]अहं, [१]च, [३]भोगरायस्स।
तूं,और, है, समुद्र विजयराजाका पुत्र। नहीं, [२]कुलोंमें,गंधनकुलके[३],होवें(वास्ते)। संजममें, स्थिर मनसे, चाल ।८। जो, तूं, करेगा(तो),
[५]तं, [४]च, [७]ऽसि, [६]अंधगविण्हिणो॥ [९]मा, [८]कुले, गंधणा. [१०]होमो। संजमं,निहुओ,चर॥८॥ [१]जइ,तं, [६]काहिसि,
(खोटे)भावकुं। जिण जिण,देखेगा(और उनमें),स्त्रीयोंकुं। वायरेसे,हलाये,जैसा,हडनामके झाड। अस्थिर आत्मा[४], होवेगा[५] ।९। तिसके[६],
[५]भावं। [२]जा जा, [४]दिच्छसि, [३]नारिओ॥ [८]वाया,विद्धु, [७]व्व, [६]हडो। [१०]अट्ठिअप्पा,भविस्ससि॥९॥ [३]तीसे,
वो[७], वचनकुं, सुणके। संजमवाली, अच्छे कहे। अंकुशसे, जैसे, हाथी[८]। धर्ममें,सारी रीते स्थापित हुआ ।१०। इसतरह[९],
[१]सो, [५]वयणं,सोच्चा। [२]संजयाइ, [४]सुभासियं॥ [७]अंकुसेण, [६]जहा, [८]नागो। धम्मे,संपडिवाइओ॥१०॥ [१]एवं,

१ हेरहनेमि!। २ अपने दोनों। ३ सर्प जैसे अपने दोनों। ४ चलवित्त. ५ संसारमें भमेगा। ६ राजिमतीके। ७ रहनेमि। ८ ठिकाणे आवे वैसे। ९ सजममें मनको थिर।